हमरा बिनु जगत सुन्ना छै

रामदेव प्रसाद मण्डल ‘‘झारूदार’’

मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'क गीत आ झारू ।

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै

रामदेव प्रसाद मण्डल ‘‘झारूदार’’

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Hamara Binu Jagat sunnaa Chhai: Anthology of Maithili Poems and Jharus by Ramdeo Prasad Mandal jharudar, Ist published in 2012, by M/s Shruti Publications, India
Price: Rs. 100

पहिल संस्करण : 2012
ISBN : 978-93-80538-70-9

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002
Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 9572450405, 9931654742
Hamara Binu Jagat sunnaa Chhai: Anthology of Maithili Poems and Jharus by Ramdeo Prasad Mandal jharudar

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै

रामदेव प्रसाद मण्डल ‘‘झारूदार’’

माए
केर
स्मृतिमे

आमुख-

मैथिलीक भिखारी ठाकुर ‘‘रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" ’’ दइ छथि माटि आ कहै छथि ‘‘हमरा बिनु जगत सुन्ना छै’’।

मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्ड्ल ‘‘झारूदार’’ जीक झारूकेँ छोड़ि कऽ? नै ने!

कारण रामदेव प्रसाद मण्डिल ‘‘झारूदार’’ महीसक पीठ, खेतक आड़ि-धूर आ रस्ता चौबटियापर स्वतः स्फूर्त जे नव विधाक आविष्कार केने छथि से समाजक दुर्गुणकेँ खरड़ासँ खरड़बा लेल छै। फुलझाड़ूसँ खरिहान नै बहारल हएत, आ खरड़ा सँ ओसारा नै बहारि सकै छी। लाठीमे राहड़िक डाँटक झारूसँ झोल-झाल साफ कएल जाइए। से तरह-तरहक बाढ़नि, आ खरड़ाक प्रचलन अछि। रामदेव जी गीत सेहो लिखै छथि, आ पनिसोखा सन रंग बिरंगक झारू सेहो। जेहेन समस्या तेहने झारू। आ मैथिलीमे जखनि गोत्र-मूलक उपनाम रखबाक प्रवृत्ति किछु नव आ पुरान लेखकमे देखल जा रहल अछि तखनि ई ‘‘झारूदार’’ उपनाम की सभ बिनु कहने कहि जाइए?

आ कविक आत्मविश्वास, हम नै तँ किछु नै।

हमरासँ पहिले कोनो नै शासन।
नै छै कोनो धर्मक विधान।।
हमरा बिनु जगत सुन्ना छै।
हटैबला छै पशु समान।।

आब ताकि लिअ ऐ झारूमे बौद्ध दर्शनक शून्यवाद आ शंकरक अद्वैत दर्शन!

हुनका पैसाक रोग नै चाही तँ अंध्विश्वासक रोग सेहो नै।

सभ बनल छै पैसा रोगी,
अन्धनविश्वास, कुरीतक जोगी

मुदा ऐ लेल रामक तीर कमान चाही की? कारण तइ लेल तँ रामक अवतारक प्रतीक्षा करए पड़त। नै, स्वयंपर करू विश्वास, कारण जँ समस्या अहाँ छी तँ समाधान सेहो अहीं।

अहाँ बिना के ई दुख हरतै
अहींसँ ई सभ दानव मरतै
कलमकेँ एक बेर फेर बनाबू
रामक तीर कमान यौ।

आपसी एकताक महत्त्व कवि नीक जेकाँ बुझै छथि, मुदा एकता केना औत, तेकर समाधान देखू:

एकता बनैले सहए पड़ै छै
घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै
अपन गलतपर लहए पड़ै छै।

नारीक स्थिति, से ओ नारी गामक होथि वा नेता ने किए बनि गेल होथि, अखनो टीस उठबैत अछि, आ कवि जँ झारूदार होथि तँ ओइ टीसक वर्णन एना होइत अछि:

नारी सीता राधा अंश,
पुरुष बनल छै रावण कंश।
फेर केना कऽ चलतै,
ई घर दुनियाँदारी यौ।

मुदा तेकर उपाय, की पुरुष बदलत नारीक दशा? नै, ई आत्मविश्वास स्वयंनारीमे छन्हि, ओ शिक्षाक डोर पकड़ती आ...

आब नै नारी रहब अनारी,
बनबै सख्ती कठोर यौ। ना...।

तँ की वएह नारी, जाति-पाति आदिक समस्या टा पर ध्यान छन्हि कविक? नै, ओ प्रदूषण सन विज्ञानक देनपर सेहो चिन्तित छथि:

विज्ञानक ई देन प्रदूषण

बनि घर घुसल चुहार यौ।
बाघ बनि ई मुँह बौने अछि
दुनियाँ बनल सिकार यौ

आ प्रदूषण केना कम हएत, सेहो नव खाढ़ीकेँ राह देखबै छथि:
इंजन हो पूरा कंडीसन
धुआँ नै छोड़ै बेकार यौ।
करू खियाल किछु अगिला पिढ़ी
केना रचत संसार यौ।
आ ऐ पर हुनकर एकटा झारू सेहो छन्हि, ओ वने टा नै वनवासीक सेहो संरक्षण चाहै छथि:
वन झील नदी आ वनवासी
पहार पठार संग रेगिस्तारन।
करू सुरक्षा पर्यावरण केर
ऐ सँ देश बनत धनवान।।

दहेज आ काटर प्रथापर रामदेव जी लिखै छथि:
आइ हर घरमे सीता रोऐ छै
राइत-राइत भरि नै जनक सुतै छै
कतए सँ एतै दहेजक पैसा
हेतै केना कन्याकदान यौ

मिथिलापर झारूदारकेँ गर्व छन्हि, कोन मिथिलापर:
जगतरनी जेतए गंगा धारा, ज्योगति लिंग केर जेतए उज्या:रा।
हजरत तुलसी बाल्मिाकक गुँजि रहल उपदेश।

मुदा बिहार अन्तर्गत जे मिथिला छै तेकर दशापर झारूदार चिन्तित छथि

आ बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार, जे विकास पुत कहल जाइ छथि
हुनका झारूदार किछु देखबऽ चाहै छथि:
केमरासँ तस्वीर बनेबै
मिथिला मैथिल परिवार केर।
तकरा देखेबै पटना जा कऽ
विकास पुत नीतिश कुमारकेँ।
फोटो बनेबै खेत असिंचित
सिंचाइ पानि विजलीसँ वंचित।

मानवता ककरामे हेतै, मानवे मे ने। आ तकरे ने भेटतै दुनियाँक ताज
आ सएह ने जीतै बनि झारूदार!

ताज मिलै सम्पूर्ण जगतक
आ बनि जीबए झारूदार
मानवमे मानवता होइ तँ
बदलै नै ओकर अवतार

तँ झारू आ गीत, जे बोन-झाँकुरमे खेत-पथारमे घुमैत-फिरैत लिखाएल से
तँ विशिष्ट हेबे करतै आ ओकर लिखैबलाकेँ से ताज भेटबे करतै।
मिथिलाक भिखारी ठाकुर ओइ ताजकेँ पहीरि झारूदार कहेबे करतै।

-गजेन्द्र ठाकुर १८ मइ २०१२

अनुक्रम

आमुख

प्रेरणा-

माए-बाबूक संस्कारसँ प्रेरित मिललै हमरा ई उदेस।
दया-प्रेम दुनियाँमे बाँटि कऽ मेटा दियौ दारूण-क्लेश।।

उदेस-

मात्र उदेस छै एत्ते हमर, घर-घरमे होइ शांति-अमन।
सुख भरल होइ जीव-जगतकेँ, हरा-भरा होइ सभक चमन।।

सहयोग-

रहल नै पाछू नितु कुमारी, संग लगा नागेन्द्र ठाकुरजी।
बनल सहयोगी श्रुति प्रकाशन, मन फोरलनि आनंदक अंकुर।।

मण्डल उमेशजी बहा पसीना, संग लगा गजेन्द्र ठाकुर।
पत्नी-बच्चा लहू जरा कऽ, सहयोगी बनलै भरपुर।।

गुरु-

पहिल गुरु माए, जग-जाहिर छै दोसरमे सौंसे संसार।
सुदुर दर्श छै गुरु आखिरी, ओ.के. रामदेव झारूदार।

प्रार्थना

हे जगतकेँ पालक श्रृजक, हे दुनियाँ केर संघारी।
अहाँसँ हमर अतबे प्रार्थणा, हम बनि सत् व्रतधारी।।

बहुत कऽ देलिऐ पहिले अहाँ, कनिये हमरो दिअ ज्ञान।
काम करए एहेन हमर तन, जगमे होइ सबहक कल्याण।।

करू निर्देशित हमरा तनकेँ, काम करए जनहितकारी।
रहए अटल सत् पथपर हरिदम, करए नै विचलित दुख भारी।।

सुखमे हम नै होइ मतबाला, हुअए नै हमरा दुखक गम।
दिल भरल रहए सेवा भावसँ, जेते करी तेते लागए कम।।

मिट जाए अज्ञान अंधेरा, दीप जलए दिलमे सुज्ञान।
ब्यापए ने हमरा कुरिती, पैदा केलक जेकरा अज्ञान।।

होइ छै जगमे की मानवता, नैतिकताक दिअ ज्ञान।
दया प्रेमक बना कऽ सागर, नित्य करब जग संग स्नान।।

करू कृपा जगपर अव्यक्ता, मेटा दियौ दुनियाँक रोग।
जाइत धरमसँ मुक्त होइ मानव, लोकक भीतर बसल होइ लोक।।

मिटए मूलसँ सभक गरीबी, रहए नै भुखल कियो इंशान।
होइ उत्थान दबल कुचललकेँ, कुछ प्रकाशु एहेन ज्ञान।।

हे निर्देशक सारे जगतकेँ, कुछ निर्देसु एहेन काम।
धरतीपर जे अमर करा दइ, उचा कऽ दइ जगमे नाम।।

झंडा गीत

झंडा तीरंगा सभसँ चंगा, छै दुनियाँमे ई बेमिशाल।
एकर ऊँचाइ हीमगिरी सन, छुइ नै सकल कियो एकर भाल।।

अइमे सागरक गहराइ, पाइब नै सकल कियो एकर पार।
करतै जे कियो एहेन ढिठाइ, निश्चित हेतै तेकर हार।।

हरा रंग छै जीवन हम्मर, कऽ रहलै झंडा एलान।
हरा हमर छै बाग बगिचा, हरा हमर छै खेत खलिहान।।

रंग केशरिया गजब के पुरिया, ई खोललनि रणवाँकुड़ा वीर।
देखलनि नै किछु आगू-पाछू, रँइग देलनि अपन सीना चीर।।

श्वेत रंग तँ दयावान छै, ई सच्चाइक पहिचान।
नीत धरम धीरज के उपमा, अहीसँ छै भारतक शान।।

चक्र सिखबै छै हम सभकेँ, ठहरू नै सुनि मिठी बात।
राह कठिन होइ चाहे कतनो, बढ्ढु विकासक पथपर दिन राति।।

सत्यमेव जयतेक अर्थ छै, सत्यक होइ छै हरिदम जीत।
सभ कोइ पकरू सत्यक डोरी, एकरा मानू अपन मीत।।

लालच नै होइ मनमे ओहन सीमा पार होइ अप्पन राज।
रहै अछुता अप्पन सीमा, तकरा खातिर कसु आवाज।।

शारनाथक अशोक स्तम्भसँ, लेलनि हिन्दी तीन बाघ निशान।

ट्रिपुल शेर अहाँ हिन्द निवासी, भरल रहै मन एतए शान।।

सिक्का नोट सरकारी पुस्तक, दस्तावेजपर शोभित निशान।
समृद्ध छै प्रभुत्व हमर ई, सुना रहल दुनियाँक गाण।।

दायाँ बैल और वायाँ घोड़ा, बीच विराजैत चक्र निशान।
हाथ मिला दुनू गाबै छै, जय जय जवान और जय जय किसान।।

दया धरमकेँ ऐ धरतीपर, लेलनि बुद्ध गाँधी अकार।
गंगा यमुना कृष्णा कॉवेरी, बहै छै जेतए पावन धार।।

जन-जनमे छै सच्ची श्रधा, जनता सेवक जेतए नरेश।
हजरत, तुलसी बालमिकीकेँ, गुइन्ज रहल घर घर अपदेश।।

जिनकर चरण पखारै सागर, हीमगिरी जेकर सिरमौर।
हृदैमे जेकरा पावण गंगा, जरै दीप सुज्ञानकेँ और जागु-जागु बाबू।।

अपन देश

अपन देश अपन देश, अपन देश मिथिला देश।
राजा जनककेँ ऐ धरतीपर, रहै नै लेश क्लेश।
अपन...।

पसरल एतएसँ ज्ञान जगतमे, छै प्रगट भगवान भगतमे।
हर नारी एतए पार्वती छै, हर नर एतए महेश।
अपन...।

पग-पगपर एतए तिरथ धाम छै, झुठ नै एतए सत्यक नाम छै।
पर उपकारक खातिर मानव, सहै छै भारी क्लेश।
अपन...।

जगतरनी जेतए गंगा धारा, ज्योति लिंग केर जेतए उज्यारा।
हजरत तुलसी बाल्मिकक गुँजि रहल उपदेश।
अपन...।

भिन्नतामे जेतए भरल छै एकता, भेद मुक्त छै अत केर जनता।
माला तोरि कऽ जाति धर्मक, सभ कोइ देलकै फेक।
अपन...।

सेवा केर जेतए परमपरा छै, हर मानव लेने हाथ खड़ा छै।
घर आएल मेहमानमे देखै, अल्ला ईषू गणेश।
अपन...।

खेत बाग हरियाली भरल छै, अन्नसँ सभ भण्डार भरल छै।
बरदकेँ घंटीसँ टिकल होय, जेतए केर पुरा देश।

अपन... ।

ऊँच जेतए मेहनतक मान छै, खुन पसिना सभक शान छै।
हाथ नै फैले केकरो आगू, घर होइ की प्रदेश।
अपन... ।

ई जननी छै हिर वीर केर, सागरसँ गहींर धीर केर
मतृभुमि केर रक्षा खातिर, गला सजल छै अनेक।
अपन... ।
सभ होइ जेतए केर ज्ञानी ध्यानी, सभ होइ जेतए सद्‌गुन विज्ञानी।
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वरासँ बटै अमन संदेश।
अपन... ।
धूम जेतए सेवा केर मचल होइ, भला अइसँ कियो केना बँचल होइ
सदियोसँ जेतए रीत पुरान, जनता सेवक नरेश।
अपन... ।

जेतए होइ किमती आइन जानसँ, झुकै नै बस टुटै शानसँ।
निष्ठा, मर्यादा मानवता, जेकरा लेल होइ नेक।
अपन... ।

झारू-

डूबल हिन्द अज्ञान के सागर, तपि रहल अछि लोभ बुखार।
शाशको तँ बंचित नै देखाबै, के करतै एक्कर उपचार।।

झारू-

फेल कऽ गेल ऐपर सभटा, एण्टिवायोटिक धरम-इमन।
निष्ठा-नैतिकता-मर्यादा, दया मानवता नीति ज्ञान।।

गीत-

मानव मारै छै मानवताकेँ
चढ़ि गेल छै अज्ञान यौ
सभा लगा कऽ सभ कियो सोचू
देशक सभ विद्वान यौ
सभ बनल छै पैसा रोगी,
अन्धविश्वास, कुरीतक जोगी
सिर चढ़ल छै भ्रष्ट आचरण, दुख चढ़ल परवान यौ।
सभा...।

जनता राजा सभ अन्हरेलै
न्याय विकासी काम बनरेलै
साहित बनि कऽ ठक लुटेरा
लुटै शान्ति ज्ञान यौ।
सभा...।

अहाँ बिना के ई दुख हरतै
अहींसँ ई सभ दानव मरतै
कलमकेँ एक बेर फेर बनाबू

रामक तीर कमान यौ।
सभा...।

झारू-

सत् कर्मसँ ऐ दुनियाँमे, शान्तिक संग सुख छै कुल।
असत् संग संगति करबै तँ, जीवन गुजरत बनि कऽ शूल।।

गीत-

सत् मे सदा अटल रहू बाबू।
सत्तक सुखमे देर छै।।
असत् अज्ञान नरक केर भागी।
ई जीवन अन्धेर छै।।

जीवन डगरमे सत् करू संचित
बितै नै पल सतसँ वंचित
छोड़ि असत् जे सतमे जीबए
से दुनियाँमे शेर छै
असत्...।

असत् छोड़ि जे सत् नै धरै छै
दुक्खक घर नरकमे परै छै
सत छोड़ि असत् मे जीबए
तकरा तँ दुख ढेड़ छै
असत्...।

सत डगरमे फुले-फूल छै
डगर असत् मे भरल शूल छै
जे परल अज्ञान अंधेरा
ई बुझैमे फेर छै
असत्...।

झारू-
जनता बनू अयोध्यावासी, भाइचाराक पढ़ि कऽ पाठ।
गुनि कऽ प्रेम दयाक डोरी, बन्हू सभ मानवक गाँठ।।

गीत-
हिन्दु-मुस्लिम सिक्ख-इसाइ,
एक्के गाछक सभ फूल यौ।
एक्के प्रकृति सभकेँ रचलकै,
दू बुझनाइ छी भूल यौ।

जाति धर्मक सीमा तोरू
मानवसँ मानवकेँ जोरू
जब एकटामे सभ मिल जुड़बै
देश हेतै मृदुल यौ
एके...।

जगत गुरूवार सभ रचना केलकै
मेल एकताक मंतर देलकै
जन जोरू जन फोरू बैनक
सभकेँ चटाबै धुल यौ
एके...।

झुठ-फुसक आइर बनल छै
अपनो भैया गैर बनल छै
अर्थक अनर्थ लगा कऽ
देशकेँ भोंकै छी शूल यौ
एके...।

झारू-
बनू एक सभ भेद भुला कऽ, नारा सबहक यएह होइ एक।
दया-प्रेम जनसेवा जकाँ, काज करू सभ नीक नेक।।

गीत-
नेता अफसर मौज करै छै।
शासक आँखिमे छिट कऽ छौर।।
जनता नै एकता बनबै छै।
तँए चाटै छै मामक घैड़।।

एकताकेँ जौं नै अपनेबै
जीवन भरि सुख लऽ सपनेबै
लुच्चा-लम्पट खुनि कऽ खाइ छै
नीचाँ-ऊपर सभ खमहौर
जन...।

अपने पेट लऽ सभ बेहाल छै
तँए तँ देशक एहेन हाल छै
मात्र औपचारिक राज चलै छै
मिडिया खाली लै छै घमहौर
जन...।

एकता बनैले सहए पड़ै छै
घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै
अपन गलतपर लहए पड़ै छै
जलै छै खुन पसिना और
जनता...।

झारू-
जइ घरमे होइ नारी पूजा, ओ घर होइ छै स्वर्ग समान।
ओइ घरकेँ तँ नरके मानू, जेतए होइ नारीक अपमान।।

गीत-
परबस जिबै छै अखनो
मिथिला देशक नारी यौ
तँए फाटल छै साड़ी यौ ना

नारी केना कऽ हेतै सख्त
कोइ नै दइ छै कनीओ वक्त
दुर हेतै केना कऽ
अबला के लाचारी यौ
तँए...।

गाम छै अखनो पुरुष प्रधान,
नारी बनल छै चुसक आम।
चुप रहि कऽ सहै छै,
पुरुषक अत्याचारी यौ।
तँए...।

नारी नेतो जौं बनै छै,
कुरसी पुरुष ओकर धुनै छै।
कानुन कसै नै छै राजा,
राजक छी बेमारी यौ।
तँए...।

नारी सीता राधा अंश,

पुरुष बनल छै रावण कंश।
फेर केना कऽ चलतै,
ई घर दुनियाँदारी यौ। तँए...।

झारू-
पूजा-पाठक सत्ता दऽ कऽ, कऽ रहलै सभ मानव भूल।
छोड़ि अपना कर्तव्य-कर्मकेँ मंदिर दौड़ए लऽ कऽ फूल।।

गीत-
देखियौ यौ सभ बाबू भैया,
ई सभ की देखाइ छै।
ज्ञान बिना ई अल्हर मानव,
सुखलेमे नहाइ छै।

दल बनेलकै सभ ठकपंथी,
एकटाकेँ देने छै महन्थी।
अन्न पानि की खेतै बाबा,
दहिएमे नहाइ छै।
ज्ञान...।

मंदिरमे खुब चढ़बु चढ़ाबा,
धन पुतकेँ खुब हेतै बढ़ाबा।
ठकपंथीकेँ फेरमे मानव,
पढ़ने ई पढ़ाइ छै।
ज्ञान...।

मॉगनेसँ जब देवता दैइतै,
निर्धन निपुत कोइ किए रहितै।
अंधविश्वासकमे अखनो मानव,
जंगलमे बौआइ छै।
ज्ञान...।

झारू-
जखनि कियो काँट चुभाबए, ओकरा लेल अहाँ फेकू फूल।
अहाँक फूलकेँ फूले मिलतै, ओकरा भेटतै शूल-त्रिशुल।।

गीत-
मेल एकता बड़ड सुख दइ छै,
गाबै वेद-पुराण यौ।
सभ भाँइमे जौं एकता रहितै,
बम-बम रहितै मकान यौ।।

छोड़ि दियौ जाति पातिक झगड़ा,
तियागि दियौ सम्प्रदाइक रगड़ा।
कंधासँ कंधाकेँ जोड़ि कऽ,
रोपु विकाशी धान यौ।
सभ...।

कुवुद्धिमे जौं ओझरेबै, केना दु:खक गुत्थी सोझरेबै।
भुख-गरीबी रोग अशिक्षा,
केना कऽ हेतै निदान यौ।
सभ...।

राष्ट्रहित लऽ सबकियो सोचु,
एकता जलसँ एकरा सिंचु
देश जौं संकटमे फसेबै,
बँचतै नै केकरो शान यौ।
सभ...।

झारू-

दाँत तोहर छौ इज्जत रक्षक, कियो मवाली पकड़ौ हाथ।
मार चपा दे फूल बत्तिसी, दाँत रहओ किछु मासुक साथ।।

गीत-

हम मिथलानी मिथिला के नारी,
रहबै नै कमजोड़ यौ।
नव डगर अपनेसँ गढ़बै,
धरबै शिक्षा के डोर यौ।

हक हमर जे आब कियो छिनतै,
अपना लऽ दु:ख अपने किनतै।
आब नै नारी रहब अनारी,
बनबै सख्त कठोर यौ।
नव...।

आब नै सहबै हम दुर्दशा,
करबै नै आब केकरो आशा
तोरि फेकबै जंजिर गुलामी,
चाहे लगतै जे जोड़ यौ।
नव...।

सभ नारीमे एकता बनेबै,
नारी ससख्ती सभकेँ जनेबै
जे कियो आब हमरा सतेतै,
झुटका दऽ मलबै ठोर यौ।
नव...।

झारू-

जरए ने दियौ कोनो प्लोथिन, ऐसँ उत्पन्न होइ छै जहर।
जौं ऐसँ अहाँ बाज नै आएब, प्रकृति ढाएत भारी कहर।।

गीत-

जागू बाबू आबू आगू
जीयापर करू विचार यौ
केना जीयब अइ प्रदूषणमे
श्रृजनहार बेमार यौ।

भू जल वायु घ्वनि प्रदूषण
दुख दुनियाँमे अपार यौ।
केना बँचब ऐ काल गालसँ
सभ मिल करू विचार यौ।

विज्ञानक ई देन प्रदूषण बनि
घर घुसल चुहार यौ।
बाघ बनि ई मुँह बौने अछि
दुनियाँ बनल सिकार यौ।

इंजन हो पूरा कंडीसन
धुआँ नै छोड़ै बेकार यौ।
करू खियाल किछु अगिला पिढ़ी
केना रचत संसार यौ।

होयत केना दुनियामे पावन
घरतीपर नर नारि यौ
जगत पावनि गंगा मैया,

खुद शुद्धिकेँ भिखाइर यौ।

झारू-
दया करू हे वीणापानी, मानवमे किछु दियौ ज्ञान।
भटकि गेल ई अपन रास्ता, भाइयो लगै छै शत्रू समान।।

गीत-
सभपर छै अज्ञानक छाया
सतसँ भेलै दूर हौ।
अपने भाएकँ लहु चाटै छै
बनि कऽ महिषा सूर हौ।
अपने...।

जाति धर्म मानवता भेदी
लोग बनल सभ अही केर कैदी
धर्मक आगिमे जड़ै ई जनता
बनि गेल छह सभ क्रुड़ हौ।
अपने...।

धर्म इमानसँ लोक छै बंचित
काम क्रोध आरो लोभ छे संचित
निष्ठा नीति मानवताकँ, जरा तपै छै घूर हौ
अपने...।

अंध विश्वास छै सभकँ धएने
कुरीतिसँ घर छै भरने
अज्ञानक आगिमे जड़लै
सबहक करम कपुर हौ।
अपने...।

झारू-
नर नेता होइ आकि होइ नारी, पदपर वएह अछि शोभाइमान।
लालच छोड़ि जनसेवा खातीर, न्याय केर खातीर करैए काम।।

गीत-
लोभी लालची राज करै छै
फुहर गाल बजाबै छै
लुटि-लुटि भोली जनताकेँ
अप्पन घर सजाबै छै।

पग-पग पसरल हेरा फेरी
काम छै काला मुँह छै गोरी
काला धनपर उजड़ा पॉलिस।
थुथुन जोड़ि सौ लगाबै छै।
लूटि...।

ककरा कहबै नीक छै बाबू
बोरा लटकल छै सबहक आगू
के करतै जनता केर सेवा
दुर-दुर तक नै देखाइ छै।
लूटि...।

राजकर्मी छै लोभ लहरमे
जनता मरै छै लूटि कहरमे
राजा पहिरने चदरा चश्मा
किछो नै एकरा देखाइ छै।
लूटि...।

झारू-
की करू हम सेवा अहाँक, घर खाली किछु छै नै धन।
बैसि बिछा दौं अहाँक नीचाँ, श्रद्धा-रंजीत अपन मन।।

गीत-
मिथिला रहि गेल बनि ई सिथला
दुक्खक भरल गोदाम यौ
रोऐ छै मिथिला केर धरती
लऽ लऽ जनक जीक नाम यौ।

आइ हर घरमे सीता रोऐ छै
राइत-राइत भरि नै जनक सुतै छै
कतए सँ एतै दहेजक पैसा
हेतै केना कन्यादान यौ।
रोऐ...।

दया धरम के गाछ सुखाइ छै
निष्ठा नीति हाट बिकाइ छै
इमानक कोनो मोल नै रहलै
सेवा भेलै लोभक गुलाम यौ
रोऐ...।

जनता हित लऽ कोइ लड़ै छै
अपने पेट लऽ सभ कोइ मरै छै
कहियो देखतै गरीब आजादी
हेतै केना नवका विहान यौ
रोऐ...।

झारू-
धरम-इमान और निष्ठा केर बीच, केकर भेल चरित्र निर्माण।
चाहे केतनो जोर लगाबू, शक्ति-संपन्न या धनवान। ।

गीत-
देखियौ यौ सभ बाबू भैया
हमरा ई की देखाइ छै
गट्टा पकड़ने लोभ लोककेँ
नरकमे लेने जाइ छै।

लोभे करबै छै सभ पाप
चाहे जते छै त्रिविध ताप
ई धऽ लेलकै जेकरा बाबू
से दुखमे बौआइ छै
गट्टा...।

लोभ सभकेँ करै छै अंधा
चाहे छै कतनो कविल बन्दा
नीत धरम निष्ठा मर्यादा
किछो नै सुझाइ छै
गट्टा...।

जेकरा चढ़लै लोभक पाप
से नै बुझै छै माए-बाप
दुनियाँ दारी के बताबए
भाइयो नै सोहाइ छै।
गट्टा...।

झारू-
मुल्ला-साधु-पण्डित-ज्ञानी, के नै छै पैसा केर भक्त।
पाछू एकर सारा जमाना, कऽ रहल छै तपस्या शख्त।।

गीत-
पढ़ै लिख कऽ सभ टेढ़ भेल छै
ज्ञान किछो नै बुझै छै
जइसँ पॉकेट बम-बम रहतै
तनै माथे सुझै छै।

पैसे लऽ विद्या पढ़ै छै
पैसे लऽ मंदिर गढ़ै छै
पैसे लऽ सभ जप-तप हइ छै
पैसे लऽ देवतो पुजै छै।
जइसँ...।

पैसेसँ राजबर्दी चलै छै
पैसेसँ आशिष मिलै छै
वेदो मंत्र पैसेसँ तौले छै
सभ अज्ञानमे जुझै छै।
जइ...।

भुलि गेलै सेवा के रीती
पैसेमे सभकँ छै प्रीति
नीत धरम इमान ज्ञानकँ
नै किछो कोइ बुझै छै।
जइ...।

झारू-
वन-झील-नदी आ वनबासी, पहाड़-पठार संग रेगिस्तान।
करू सुरक्षा पर्यावरणक, ऐसँ देश बनत धनवान।।

गीत-
केमरासँ तस्वीर बनेबै
मिथला मैथिल परिवर केर।
तकरा देखेबै पटना जा कऽ
विकास पुत नीतिश कुमारकँ।

फोटो बनेबै खेत असिंचित
सिंचाइ पानि बिजलीसँ वंचित।
और बनेबै बाँटल खेतमे
दूर-दूर फाटल दरार केर।
तकरा...।

फोटो बनेबै टुटल घरक
उखरहा एकताकँ जोड़ि कऽ।
भूख गरीबी रोग अशिक्षा
आगू खड़ा पहारकँ।
तकरा...।

अंधविश्वासक महल देखेबै
दहेज कुरीतक जहल देखेबै।
फोटो बनेबै छुपल लुटेरा
ढोंगी ढोंग ढपारक।

तकरा... ।

झारू-
पहिर माला मानवताक, देश विकासक लगा दियौ होड़।
अहाँ बनि जाउ चान गगन केर, निहारै जनता बनि चकौर।।

गीत-
मिल कऽ सजेबै राज पंचायती
मेल एकता केर फूलसँ।
भूख गरीबी रोग अशिक्षा
तब ने मिटतै मूलसँ।

युवा वर्ग आबू सभ जागू
न्याय विकाशी फूल खिलाबू।
शिक्षाकेँ नै गारि सुनाबू
लोभ लालच केर फूलसँ।
भूख...।

न्याय दिअबै गामे अन्दर
लोग नै बनतै कोर्टमे बन्दर।
सभ मिल झगरा आगि बुतेबै
समता मूलक शूलसँ।
भूख...।

सही सही राजकोष चलेबै
घर-घर शान्ति दीप जरेबै।
विकास खोधि धरतीसँ निकालबै
शंकर केर त्रिशूलसँ।
भूख...।

झारू-
भागि गेला अंग्रेज अकेला, छोरि कऽ पाछू ढेरो जाति॥
कर रंगदारी वसुल रहल अछि, मारि मारि कऽ सभकेँ लाति॥

गीत-
लोभी लालची कामी क्रोधी।
भूमि भरल दूर-दूर हौ॥
बाजह हौ काका केना कऽ हेतह।
देशक गरीबी दूर हौ॥

हाथ कड़ोरो काम जे कैरतै।
सोनसँ खजाना भैरतै॥
घर बैसल घरघुसरा बैनि कऽ।
कला कौशल मजदूर हौ॥
बाजह...।

व्यर्थ बैसल मानव संसाधन।
हाथ पैर मेंहदी आँखिमे आजन॥
भरि दिन चौकपर तास खेलै छै।
और मचबै छै हुर हौ॥
बाजह...।

सी.ओ, बी.डी.ओ, सरपँच मुखिया।
धरतीपर सभसँ ई दुखिया॥
फँड केना सभ हम्मर हेतै।
हरिदम भाजै भूर हौ॥
बाजह...।

शान्ति सभकेँ दाँत काटै छै।
एक दोसर लऽ दुख बाँटै छै॥
अपने भायकेँ लहु चाटै छै।
बनि कऽ महिषासूर हौ॥
बाजह...।

काम-क्रोध और लोभ भरल छै।
आगि अज्ञानमे सभ जड़ल छै॥
आम जानि कऽ सभ रोपै छै।
गजड़ा काँट बबुर हौ।।
बाजह...।

सुस्त परल छै राजक कर्मी।
सेवामे बर्तै छै नर्मी॥
सत् कर्मकेँ सभकोई छोड़ि कऽ
सुखसँ भेलै दूर हौ।।
बाजह...।

राजकोषपर नजर गरल छै।
हथियाबक लोभ भरल छै।।
हम्मर की कर्तव्य बनै छै।
ज्ञान हिनकासँ दूर हौ॥
बाजह...।

जाति धरम मानवता भेदी।
लोग बनल सभ अही केर कैदी॥
धरम आगिमे जड़ि ई जनता।

बनि गेल छह सभ क्रुड़ हौ।।
बाजह...।

धरम इमानसँ लोग छै वंचित।
काम क्रोध और लोभ छै संचित।।
निष्ठा नीति मानवताकँ।
जड़ा तापल केर घुर हौ।।
बाजह...।

अन्धविश्वास छै सभकँ धरने।
कुरितीसँ घर छै भरने।।
अज्ञानक अग्निमे जड़लै।
सबहक करम कपुर हौ।।
बाजह...।

वोटक खातिर आजुक नेता।
मारै छै चानी केर जूता॥
कुछ पापी तँ वोट बेच कऽ।
खाधि खसल छै जरूर हौ।।
बाजह...।

गप्पे-गप्पमे लफड़ा बढ़लै।
शाशक सिरपर टेन्शन चढ़लै।।
अलुल-जलुलसँ लड़ि ई शाषक।
भेलह चकना चूर हौ।।
बाजह...।

मुँह देखैल पंचैती होई छै।
घूस पंच भगवानो खाइ छै।।
आब ककड़ापर आश करतै।
गामक लोग मजबूर हौ।।
बाजह...।

ज्ञानले नै कोइ स्कूल जाइ छै।
नौकड़ी कऽ ई जड़ि देखाइ छै।।
शिक्षामे सभ कोई खोजै छै।
पाइ अड़जि कऽ लुरि हौ॥
बाजह...।

झारू-
भारत हो या ओइसँ बाहर, सत् जन कऽ रहलै स्वीकार।
मानवकेँ छै दू आधार, सादा जीवन ऊँच विचार।।

गीत-
दया धरम निष्ठा मानवता
ज्ञान भरल भरपुर गै
बोल गै दैया केना नै हेतै
देशक गरीबी दूर गै।

रोजगारक आब अवसर बढ़तै
भूखल नै सबहक पेट भरतै
नेता जनहित बोतल पीब कऽ
रहतै हरिदम चूर गै
बोल गै...।

श्रम साधनक कहाँ कमी छै
खनिज भरल हर जगह जमीन छै
लोहा-अवरक ताम्बा-कोयला
खान भरल भरपुर गै।
बोल गै...।

सत् कर्म सभ कियो अपनेतै
सत्यक रोटी हरिदम खेतै
सत्यक खातीर जगसँ लड़तै
रण बाँ कुड़ा वीर गै

बोल गै...।

हिन्सा छोड़ि सभ शांति धरतै
वसुधाबि कुटुमकम गढ़तै
जग अमन केर पोथी पढ़तै
साँझ-भोर-दुपहर गै
बोल गै...।

काम-क्रोध और लोभ भगेतै
घर-घर शांति दीप जरेतै
आब नै राज अज्ञानक रहतै
धरतीपर दूर-दूर गै
बोल गै...।

सेवाकेँ सभ पूजा बुझतै
असत् छुटै केर युक्ति सुझतै
असत् छोड़ि सभ सुख अपनेतै
आब बेसी नै दूर गै
बोल गै...।

झारूदारक सभ झारू पढ़तै
सत् अहिंसा मनमे भरतै
लोभ लालचक चिता जरा कऽ
हिंसासँ रहतै दूर गै
बोल गै...।

धरम इमान सभ कियो अपनेतै
मानवता केर मंठ बनेतै

जाति धरमसँ पानि भरेतै
देसक लोक जरूर गै
बोल गै...।

लोभ लालच आब ज्ञानसँ भगतै
सेवा लऽ सबहक मन जगतै
मानवता नै मुँह चोरेतै
आब बनि मजबूर गै
बोल गै...।

अन्धविसबासमे कोइ ने पड़तै
कुरीतिकेँ बाहर करतै
ज्ञान-विज्ञानक पोथी पढ़ि कऽ
कर्मक बान्हतै धुर गै
बोल गै...।

लोभमे आब नै वोटकेँ बेचतै
राष्ट्र हित लऽ बटम दबेतै
वोट बेचि कऽ पाप करै छी
सोचतै सभ जरूर गै
बोल गै...।

गाँधीक उपदेश भरल छै
ऋृषि-मुनिसँ वेद जरल छै
गौतम केर धरतीसँ टपतै
मानवताक नूर गै

बोल गै...।

झारू पढ़ि सभ लोभ भगेतै
दादाबला दाउ लगेतै
न्यायक खातीर दाउ चढ़ेतै
अपन जान जरूर गै
बोल गै...।

आब नै रहतै मानव दानव
ज्ञानसँ रूकतै दुखक कानब
शिक्षा केर आब माने बुझतै
ज्ञान-कर्म जरूर गै
बोल गै...।

झारू-
दुनियाँ भरिक सुख होइ हमरा, दुख रहै हरिदम हमरासँ दूर।
इच्छा-द्वेष छी दुखक सागर, ऐमे नै डूबि मरू हजूर।।

गीत-
बाबू करम कलमसँ लिखू अपन भाग यौ
पाबू सत्यक साग यौ ना

कर्म गति छै भारी गहन
सत्यकँ धारू अपना मन।
बाबू सत्य पकड़ि कऽ
बमबम रहतै बाग यौ
पाबू सत्यक...।

कर्मे दइ छै घर और घरनी
गंगाधाम या नदी बैतरनी
डुबा देतै की करतै
ऊँचा मरदक पाग यौ
पाबू सत्यक...।

कर्मेसँ छै बेटा-बेटी
करते सेवा कि धरतै चोटी
कुलकँ ऊँच करतै
आकि लगेतै दाग यौ
पाबू सत्यक...।

बचू असत्यक ई चपेटि

लिअ तनमे सट लपेटि
तनमे लगा नै सकतै
कलजुग कोनो दाग यौ
पाबू सत्यक...।

झारू-
कर्त्तव्यमे अधिकार जुड़ल छै, एकरे अपना तनमे जोड़।
चिंता कर नै अधिकारक, मिलतै निश्चित करि कऽ सोर।।

गीत-
ऊँच करबै अपना देशक नाम गै बहिनियाँ
सातो करतब करबै परमान गै बहिनियाँ।

करबै सभ संविधानक आदर
राष्ट्र प्रतीकक सम्मान सादर
एकता चढ़ा रखबै परमान गै बहिनियाँ
तीनू करतब करबै परमान गै बहिनियाँ
ऊँचा करबै...।

देशपर एतै जब कोनो संकट
लगा देबै सहयोगक जमगघट
राष्ट्र सेवा पहिला होएते काम गै बहिनियाँ
चारिम करतब करबै परमान गै बहिनियाँ
ऊँचा करबै...।

सभकेँ बुझबै सम बरबरि
भाषा-मजहब जाति बरबरि
नारीक ऊँचा करबै मान गै बहिनियाँ
पाँचम करतब करबै परमान गै बहिनियाँ
ऊँचा करबै...।

धन सरकारी रक्षा करबै
छोड़ि हिंसा शांतिकेँ धरबै
अहीसँ करबै समस्याक निदान गै बहिनियाँ
छअम करतब करबै परमान गै बहिनियाँ
ऊँचा करबै...।

वन-क्षील-नदी और वनवासी
पर्यावरण छी रक्षा राशी
अहीसँ हेतै सबहक कल्याण गै बहिनियाँ
सातम करतब करबै परमान गै बहिनियाँ
ऊँचा करबै...।

झारू-
पेड़ पौधा छी जीवन रक्षक, अही केर भीतर सबहक प्राण।
कर्वो-प्रोटीन-वसा-विटामीन, भरलनि और खनिज भगवान।।

गीत-
बौआ पाँच गाछ सभ साल लगा रौ
एकरा सन दोसर नै सगा रौ

ई देतौ तोरा शीतल छाया
फल देतौ पोसैले काया
मैया धरतीकेँ अहीसँ सजा रौ
एकरा सन...।

जरना देतौ बनबैले खाना
फर्निचर देतौ विधि नाना
दबाइ बना कऽ दरद भगा रौ
एकरा सन...।

भगबै छै वायु प्रदुषण
बनि खड़ा छै जे खड़दुषण
पर्यावरण प्रदुषण भगा रौ
एकरा सन...।

वायु वेगकेँ कम करै छै
जड़िसँ जमीन जकड़ि पकड़ै छै
नै तँ सभ माटि जेतौ दहा रौ

एकरा सन...।

बादलकेँ आकर्षण करै छै
भू-मण्डलकेँ जलसँ भरै छै
उठैत खेतमे फसल लहलहा रौ
एकरा सन...।

झारू-
साधुवाद हे देशक धरती, साधुवाद हे सभ जनता।
साधुवाद हे ताज देशक केर, साधुवाद सम्प्रभुता।।

गीत-
कोसी-बलान कमला आँचरपर
बसल ई सुन्दर गाम यौ
धन-धन मिथिला धन-धन मैथिल
धन-धन जनकपुर धाम यौ।

ताल तलैया भरल सरोवर
वन-बागमे शोभा दोबर
फल-फूलसँ लदल गाछमे
भोम्हरा करै छै गाण यौ
धन-धन...।

हीर विर केर जननी धरती
जनम-जात पावन सतवर्ती
केतौ ने एहेन शीतल छाया
धरतीपर कोनोठाम यौ
धन-धन...।

चलह देखए कोसी महासेतु
निरमली उतरब ऐ हेतु
केहेन बनेलकै राजक राजा
मिथिलाक गौरव शान यौ

धन-धन... ।

झारू-
सबल रहै मिथिला केर धरती, सबल रहै देशक जनता।।
सबल रहै ताज मिथिला केर, सबल रहै सम्प्रभुता।।

गीत-
हम्मर मिथिला हम सभ मैथिल
छी दुनियाँमे सोर यौ
धन-धन मिथिला धन-धन मैथिली
जनकपुर जगमे बेजोर यौ।

राज जनकक शान भरल छै
विद्यापतिक गाण भरल छै
निष्ठा नीति ज्ञान भरल छै
अंग-अंग पोरे-पोर यौ
धन-धन मिथिला...।

ताल तलैया भरल सरोवर
वन-उपवनमे शोभा सुन्दर
नीत नव नूतन फूल खिलै छै
भोम्हरा करै छै सोर यौ
धन-धन मिथिला...।

जग जाहिर छै धाम सिंहेसर
जागेसर संग और विदेसर
मदनेसर कुसेसर नामक
बाजए डंका जोर-जोर यौ
धन-धन मिथिला...।

झारू-
जनता रोबै सूखल रोटी, घी मलिदा अफसर नेता।।
देसक ई दसतूर बनि गेल, बहए बरद आ हकमए कुत्ता।।

गीत-
कत्ते सूतब यौ युवा बिहारी
जागैक मौसम आइ छै
लुच्चा-लम्पट चोर-उच्चका
देसकेँ लुटने जाइ छै।

जेकरे मिललै कुंजी-ताला
बनि गेलै हाथी मतबाला
टाँग तर चिप्पल भोली जनता
बाप-बाप चिचिआइ छै
लुच्चा लम्पट...।

अफसर रखै छै दलाल
तँइ तँ जनता छै बेहाल
बस ओकरे टा काज चलै छै
जेकरा घूसक पाइ हाथ छै
लुच्चा लम्पट...।

लगबू मेल एकताक मंत्र
तोड़ि फेकू ई चोरबा तंत्र
जइसँ बूझै ई पतितबा
ईहो सभ कसाइ छै
लुच्चा लम्पट...।

झारू-
इन्कलाबमे लहू बहा कऽ, बेर्थ गेलै सभ वीरक खून।
पहुँचै छै कहाँ सभ जनता लग, देसक आजादीक गुण।।

गीत-
तुमलोग कहाँ आजादी पौलकै
सभ लऽ रहलै आपे-आप
शासक सूतल पलंग तोड़ै छै
के निगरेतै बाप-रौ-बाप

समता लऽ आजादी एलै
याद छै केकरा सभ भूलि गेलै
मोल मेटेलै रँग केसरिया
सिर चढ़ल छै अमीरी ताप
शासक...।

हम श्रमिक जे देस रचै छी
परान पसीना खून बेचै छी
ई इनसाफ कतएसँ एलै
तकरा छै नून-रोटीक श्राप
शासक...।

साहित्य चलि रहल छै उनटल
तँइ तँ जनता जाइ छै बिलटल
ठक-लुटेरा फेरिमे जनता

करम छोड़ि करै छै जाप
शासक... ।

तंत्र संरक्षण करै छै भक्षण
होइ नै शासकसँ संरक्षण
सभा लगै ने अहि केर खातिर
और ने होइ छै वार्तालाप
शासक... ।

देशमे फैलल छै अन्हेर
केना हेतै फेर सबेर
अज्ञानक अज्ञानमे जनता
नाहँक दुखमे करै विलाप
शासक... ।

झारू-
कुरसी शोभा ओइ मानवकेँ, जे मिलतै दिल-दिलसँ जोड़ि।
होइ रीत जेतए केर एहेन, बढ़तै विकास जंजीरकेँ तोड़ि।।

गीत-
नेता अफसर देशक मुड़ी तर केलकै काका हौ
बेचि धरम-इमान खाइ छै घूसबला टाका हौ।

बुझै नै कियो निष्ठा-नीति
स्वाभिमानक नै छै परिचिती।
जाति-धरमक झगड़ा लगा कऽ
देशकेँ केलकह फाँका हौ
बेचि धरम...।

सेवाकर्मी लोभमे ढुलतै
कर्मीकेँ पैसेमे भुलतै
बैसि गेलह आब बस विकासी
कत्ते लगेबह धक्का हौ।
बेचि धरम...।

निष्ठासँ नै काम करै छै
लक्ष्मी पात्रसँ मात्र डरे छै
जौ मुँहदुबरा ऑफिस एलै
मारै छअ ओकरा धक्का हौ
बेचि धरम...।

झारू-
बच्चा बनतै बिलकुल ओहने, जे रखने छी अहाँ उसारि।
ऐपर केकरो बस नै चलै छै, देखबै प्रकृति आँखि पसारि।।

गीत-
कनी देखही गै दाइ
कनी सुनही रौ भाय
कनी मानही गै माय
बाप अज्ञानवस बनलै कसाइ।

दिन भरि साहब जे कमबै छै
साँझ तक दारूमे गमबै छै।
माए-बाबूपर रौब जमबै छै
कोड़ासँ कनियाँकेँ करै पिटाइ।
कनी देखही...।

चौक-चौरहापर मोछ लहराबै
कोँचाबला धोती पिन्ह फहराबै
किसमत केर कनियाँ घरमे रोबै छै
पेट पोसैले करए कुटाइ-पिसाइ
कनी देखही...।

बौआ पढ़ाकू भैंस चरबै छै
बुच्चीसँ माँ सभ काज करबै छै
टटका फैदा सभ कोइ देखै छै
चुल्हीमे गेलै इसकूलक पढ़ाइ
कनी देखही...।

झारू-

हे रसुआर केर बाबा वनजरैया, रूकै ने पण्डित घरक पास।
डूमि रहल मानव कुरीतिमे, डुमा रहल अनधविश्वास।।

गीत-

मूर्तिमे भगवान सेबै छी
भाँसै छी दऽ कऽ खेबा यौ।
गीता कहै छै जीव शिव छी
करू जगत केर सेवा यौ।

नि:स्वार्थ सेवा नै केलौं
तब तँ जीवन व्यर्थ गमेलौं।
बिनु सेवाक व्यर्थ छै बाबू
पूजा-देवी-देवा यौ।
गीता कहै...।

जग लुटेरा ठक भरल छै
हाथ-हथियार पुरान पड़ल छै।
पुण्य कल्याणक नामपर काटै
सबहक जेबी-जेबा यौ।
गीता कहै...।

सेवा बिना छै ज्ञान अधूरा
झट पकड़ू आ पट करू पूरा।
छोड़ि सतेनाइ सेवा धरू
जीवन हेतै मधुमेवा यौ।

गीता... ।

झारू-
बेटा पोसलौं असत्यक धंधा, और खिलेलौं बुड़ी कमाइ।
बनल रहत ओ राहक रोड़ा, बक्त पड़त तँ बनत कसाइ।।

गीत-
सेर भेल छोटकी पेट भेल बड़की
आब कहू केना चलतै गुजर।
छौड़ा सभ नै मत सुनै छै
विलटैबला एलै पहर।

कन्या सभ छै गलबजौनी
मुँहसँ उगलै बीख-जहर।
ज्ञान घरूआरक लेइक बदला
सासुपर ढाहि रहल छै कहर।
छौड़ा सभ...।

एकटा छै दिल्लीकेँ धेने
भेजै नै खाइयौले जहर।
तेकर कनियाँ पलंग तोड़ै छै
बैसि-सुति गमबै आठो पहर।
छौड़ा सभ...।

ई अज्ञानक फेर छी बाबू
मानू कनीओ बात हमर।
पुत्रकेँ पोसू सत्यक कमाइ

हेतै ने कहियो घरमे कहर।
छौड़ा सभ...।

छौड़ा सभ सभ बातमे रहतै
भगतै घरसँ दुखक लहर।
सेर हेतै बड़की पेट हेतै छोटकी
भगतै घरसँ सारा कहर।
छौड़ा सभ...।

कथनी सुनि लिअ काली माइ, सभकेँ होइ मानवताक ज्ञान।
गिर गेल मानव नरक खानमे, नैतिक पतनकेँ करै उत्थान।।

गीत-
शिक्षा एलैए ऐ दुनियाँमे
सबहक घरमे रहैले।
दुनियाँक सुख-शांति खातिर
बरद बनि कऽ बहैले।

जौं घरमे शिक्षा नै लाबबै
मंगल गीत केना कऽ गबबै।
अपना नैनाकेँ सभ कियो पढ़ाबू
दुख दुनियाँक गहैले।
दुनियाँक सुख...।

शिक्षेसँ सुख-शांति एतै
दुख-गरीबी घरसँ जेतै।
सुखक गाड़ी चढ़ि चलू सभ
शिक्षा एलैए कहैले।
दुनियाँक सुख...।

काम करू सभ सच्चा-पक्का
पड़ै ने केकरो सुखमे धक्का।
शिक्षा कहै छै सभ मानवकेँ
आनो ले दुख कहैले।
दुनियाँक सुख...।

झारू-
सभसँ भारी दहेज बेमारी, परिणय सूत्रक ई छी घुन।
रोबै छै सभ बेरा-बेरी, बहा-बहा आंशूमे खून।।

गीत-
जिनगी दुबर भऽ गेल
राजा जनकक देशमे
सभ डुमलै कलेशमे यौ।

लोककेँ लगलै लोभक बोखार
तँइ सभ धुनै छै कपार।
अज्ञान चलबै छुपि कऽ राज दहेजक भेषमे।
सभ डुमलै...।

कफ्फन बनि गेलै दहेज
कोइ नै करै छै परहेज।
बेरा-बेरी पड़ै छै
सभपर मुरदा भेषमे।
सभ डुमलै...।

सबहक मरि गेल नीति-निष्ठा
तँए तँ खाइ छै दहेजी विष्टा।
ज्ञान बिनु लोक जीबै छै विलकुल सुगर भेषमे।
सभ डुमलै...।

केकरा कहबै नीक छै बाबू
एकटा दुटा लाबू आगू।
लटकल बोड़ा देखैबे

बिलकुल बटुआ भेषमे।
सभ डुमलै...।

झारू-
ओइ पोथीकेँ राखि उसारू, खड़ा करै जे जाति-धरम।
आगू लाबू ओइ पोथीकेँ, सिखबै जे मानवताक करम।।

गीत-
हिन्दु-मुस्लिम, सिख-इसाई
सभ मिल कऽ दियौ ई भाषण।
जाति-पाति मानवता भेदी
दइ छै नै केकरा ई राशन।

जाति-पाति नेता जगबै छै
अपन जीतक जोगार लगबै छै।
ई नेता छी देशद्रोही
ई की बुझतै सुशासन।
जाति-पाति...।

जाति-पातिकेँ मनसँ भगाबू
फूल मानवता घर सजाबू।
मेल मिलाप समता एकताकेँ
तइमे दियौ उच्च आसन।
जाति-पाति...।

एक बनू सभ मानव-मानव
तब ने रूकतै दुखक कानब।
फूट अनेकताक चिता जरा कऽ
और दियौ ओकरा अरगासन।
जाति-पाति...।

झारू-
जमा केलौ धन लूटि-लूटि कऽ, बेटा पोसलौं घूसक धन।
करू नै आशा ओकरा सुक्खक, जरा जीअत अहाँ केर तन।।

गीत-
समैसँ पहिले भागसँ बेसी
केकरा मिलतै बाबू यौ।
तइ दुआरे संतोष धरू
मनकेँ करू काबू यौ।

बिनु संतोषे नै मिलतै शांति
जीवन रहतै लफड़ा क्रांति।
धियान नै रहतै नीति-इमानक
मन रहतै बेकाबू यौ।
तइ दुआरे...।

सुख-लाभ सभ कोइ चाहै छै
दुख-घाटासँ सभ भागै छै।
इच्छा बेस छी दुक्खक कारण
सभ कियो एकरा तियागू यौ।
तइ दुआरे...।

अपने हाथपर करू आशा
लगबू नै अनकामे धाँसा।
स्वाभिमान नै जिन्दा रहतै
फेर केना कहेबै बाबू यौ।

तइ दुआरे... ।

झारू-
रहल भरममे फँसि कऽ सुग्गा, देखि कऽ सुन्दर सिम्मर फूल।
भागल भरम जौं लोल ओ मारल, यादि आएल फेर अप्पन भूल।।

गीत-
की अरजबै ओइ बेटाले
पुत जे छै कुपुत यौ।
उ तँ अरजतै खुद अपनेसँ
पुत जे छै सुपुत यौ।

कोइ अरजै छै मान-मर्याया
कोइ चाहै छै इज्जत ज्यादा।
कोइ बनल छै असंतोषमे
कंस-कौरब केर दूत यौ।
उ तँ...।

कोइ अरजै छै यश और कृति
अरजै छै परलोकमे धरती।
कोइ-कोइ हिंसा बूनि-बूनि कऽ
बन गेल छै जमदूत यौ।
उ तँ...।

कोइ बाँटै छै जगमे सेवा
अरजै छै अमरत्वक आभा।
कोइ परल अज्ञान-अंधेरा

बनि कऽ जीबै छै भूत।
उ तँ...।

झारू-
बेटा-बेटी सम-बरबरि
एकर रक्खू पुरा धियान।
जौं बेटीकेँ शिक्षा देबै
काटि बैसत बेटाक कान।

बेटी पढ़ि कऽ भऽ गेल घरक ई जंजाल यौ
माए-बाबूक काल यौ ना।

देखियौ अज्ञानक चरित्र
पाइयेमे छै सबहक प्रीति।
पाइ बिनु आब नै होइ छै
रिस्ता कोनो बहाल यौ।
माए-बाबूक...।

बेटी आइ.ए., बी.ए. पास
दुल्हा छिलतै घोड़ा-घास।
बाप केना कऽ करतै
बेटीक हलाल यौ।
माए-बाबूक...।

दुल्हा जौं मिलै किछु योग्य
लाख-दास छै ओकर डोज।
बापकेँ सुनि डोलै छै
भितरसँ महाल यौ
माए-बाबूक...।

एगो रहितै तँ गिन दइतै
चाइटा केना कऽ समेतै।
लोक ओझरा मरै छै
रीत-कुरीतक जाल यौ।
माए-बाबूक...।

झारू-
भूल करै जौं वनक पंक्षी, पशु करै तँ और छै बात।
ऐसँ वंचित जीव-जगतकँ मात्र छोड़ि कऽ मानव जाति।।

गीत-
कनी देखही दिनेश
कनी सुनही सुरेश
कनी मानही महेश
लोक अज्ञानवश फँसलै कलेश।

लोक अस्तयकँ जब नै छोड़ै छै
दुखक घर नरकमे पड़ै छै।
तकरा मदत नै देवो केरै छै
और मुँह मुड़ै देशक नरेश।
कनी देखही...।

सारे-महिने भागवत सुनै छै
कोइ नै किच्छो मनमे गुणै छै।
दुख पड़लासँ माथ धुनै छै
पकड़ि असत् केना कटतै कलेश
कनी देखही...।

छोड़ि शांति हिंसा अपनाबै
मानवतासँ पानि भराबै।
दया-धरमसँ टहल कराबै
तेकर रक्षा केना करतै गणेश।

कनी देखही... ।

झारू-
सेवा करि कऽ जगवासीकेँ, मांगू नै छीनू आशीष।
जौं सेवबै नि:स्वार्थ भावसँ, ईश्वर देतै सुख-बखसीश।।

गीत-
सेवा दइ छै सभकेँ मेवा
बाजै छै बाबा केशौरी दास।
बिना स्वार्थ जे सेवा करतै
दुख नै रहतै तकरा पास।

आइ सेवाकेँ कोइ नै धड़ै छै
स्वार्थेमे सेवोकेँ करै छै।
सेवा चढ़ि कऽ लोभक गाड़ी
धऽ लेलक दुखमे अवास।
बिना स्वार्थ...।

जीवनक दू राह फुटल छै
सेवा सतेनाइ साथ जुटल छै।
छोड़ि सतेनाइ सेवा धरू
जीवन सफल भऽ पूरत आश।
बिना स्वार्थ...।

धरू सदा लऽ सेवा-शांति
बढ़ै ने मन कखनो क्रांति।
जीवनक ई मूल मंत्र छी
एकरा पकड़ि कियो होइ नै नाश।

बिना स्वार्थ... ।

झारू-
जब-जब जनम होइ ऐ धरतीपर, भारत माँ तोरा देशमे।
रक्षा करब हम तोहर माता, वीर-बाँकुरा भेषमे।।

गीत-
केते कहबौ रौ भाय
केते कहबौ रौ भाय
केते कहबौ रौ भाय।
भाय भूमिक वीर बराइ
केते कहबौ रौ भाय।

सिना भड़कलै ज्वाला क्रांति
तियागि देलकै अपन सुख-शांति।
तिलक लगा धरतीक धूलसँ
देशक दुश्मन ले बनबै कसाइ।
केते कहबौ...।

हिन्दु-मुस्लिम-सिख-इसाई
एक बनलै सभ हिन्दी भाय।
बना दुल्हनिया गोड़ी-फिरंगी
वीर दुल्हा संग भेलै सगाइ।
केते कहबौ...।

गजब शस्त्रसँ केलकै क्रांति
हाथ-हथियार छेलै सेवा-शांति।
ओकरे जरूरी अखनो छै बाबू

अहीसँ हेतै देशक भलाइ।
केते कहबौ...।

झारू-
अंग-अंगमे लोभ जकरलक, मन फँसल छै माया जालमे।
अपना आगिमे क्रोध लड़ाबै, काम नचाबै दऽ दऽ ताल।।

गीत-
ज्ञान बिनु मानव भऽ गेल झर
हरिदम उगलै छै जहर।
दुखमे डुमलै मानव जाति
कोइ पकड़ गै पकड़।

हरिदम झुट्ठे-फूसि बजै छै
सभटा उल्टे चालि चलै छै।
निष्ठा मरि एकर
कोइ पकड़ गै पकड़।

बेचि देलकै धरम-इमान
संग छै नै नीति-ज्ञान।
रक्षा करतै के एकर
कोइ पकड़ गै पकड़।

छुटलै दया-धरम केर रीत
छै नै सेवासँ परचित।
दुख बॉटतै के एकर
कोइ पकड़ गै पकड़

मेटेलै मानवता-मर्यादा
हरिदम करै छै झूठा वादा।

एतबार करतै के एकर
कोइ पकड़ गै पकड़।

झारू-
पैसेमे तँ सभटा सुख छै, घेर लेलक सभकेँ अज्ञान।
साधु-मुल्ला, पण्डित-नेता, सभ खुनै पैसा केर खान।।

गीत-
सभ ठकै छै ऐ जनताकेँ
नेता-पण्डित बाबा यौ।
तँए तँ देशक एहेन हाल छै
तबल-तबाएल छै ताबा यौ।

नेता नै जनहित बुझै छै
नफ्फे टा दिस आँखि सुझै छै।
नीति-धरमकेँ किछु नै बूझै छै
जानै नै जनसेवा यौ।
तँए तँ...।

अन्धविश्वासक राज चलै छै
घर-घर कुरितक दीप जरै छै।
छोड़ि अपन कर्त्तव्य-कर्मकेँ
पूजै करोड़ो देवा यौ।
तँए तँ...।

पंडीजी ओहने पाठ पढ़बै छै
जइसँ चढ़ाबा बेस चढ़बै छै।
भवसागरक पार उतरै केर
अहीठाम लइ छै खेबा यौ।

तँए तँ... ।

झारू-
नै छेलियै कोइ ऐ धरतीपर, रहबै नै कोइ ऐ केर बाद।
प्रगट छी जबतक ऐ धरतीपर, ऐ बीच जीवन करू अबाद।।

गीत-
सभ कोइ मिलि कऽ मिथिलाकेँ
सजाबै जाउ यौ बाबू।
उजरए नै ई धरती
तइ कामपर काबू यौ।

बिसरू नै समता केर बोली
अहीले खेललै खूनक होली।
वीरक खनक मानकेँ
बँचाबै जाउ यौ बाबू।
उजरए नै...।

अपन चैनक बोड़ा खोलू
सेवामे जनता लेल घोरू।
भ्रष्टाचारक नामकेँ
मेटाबै जाउ यौ बाबू।
उजरए नै...।

जगबू अपन नीति-निष्ठा
तबे देतै जग प्रतिष्ठा।
मानवताक दुनियाँमे
बसाबै जाउ यौ बाबू।

उजरए नै... ।

झारू-
कम खाउ आ रहू गमसँ, करू नै केकरो पमौजी।
रोटी होइ बस सत्यक कमाइ, चलतै जीवन मनमौजी।।

गीत-
केना जीबै छै लोक एतए केर
देखियो जा कऽ करीबसँ।
कोन हालमे अहाँ जीबै छी
पुछियौ कनी गरीबसँ।

पेट छै खाली रोटी बिनु
तन छै कपड़ा वस्त्र विहीन।
सिरपर छत ले अरज करै छै
दिन-राति अल्ला-शिवसँ।
कोन हालमे...।

कतए देखतै लड्डू-लाइ
कोदो मरूआ लगै मिठाइ।
धन-धन हे अल्हुआ बाबा
मिलै छह तहूँ नसीबसँ।
कोन हालमे...।

ऊपर अंबर निचचा जमीन
आशा केकरो नै अल्ला बिनु।
कोनो विधिसँ ॲटकल रहू
कहै छै अपना जीवसँ।

कोन हालमे...।

छै ई दुनियाँ भरिक मारल
शामंतवादक झमारल।
ई शोसित छै जनम-जनमक
तँइ हिलल छै नीबसँ।
कोन हालमे...।

झारू-
पैसामे छै भूख अजूबा, भरल नै ऐसँ केकरो पेट।
राजा भूखल जनता भूखल, भूखल अछि सासु और सेठ।।

गीत-
हे रसुआरक बाबा वनजरैया
लगबह कोनो जोगार हे।
अज्ञानक अन्हारमे डुमलै
आधुनिक संसार हे।

आबि तृष्णामे जरै छै दुनियाँ
लोभ बनैलकै लोककेँ खुनियाँ।
देवीक भौतिक और अध्यात्मिक
हाथ धड़ा हथियार हे।
अज्ञानक...।

सरोसती लछमी ले मरै छै
नीति इमान बीच सड़क जरै छै।
जइ कलमसँ सेवा होइतै
से बनलै तलवार हे।
अज्ञानक...।

हक गरीबक कतल करै छै
अपन-अपन मलह भरै छै।
निहित हाथ राजकोषक पैसा
समा रहल बेकार हे।

अज्ञानक... ।

झरू-
जमीन पटा दियौ गाछ-बिरिछसँ, सभ जगह करि दियौ उद्यान।
एना अगर जौ कऽ नै सकब तँ, तैयारू हतैले प्राण।।

गीत-
बाबू गाछ लगाबू परदुषण भगाबै ले
दुनियाँकेँ बसाबैले यौ ना।

लइ कार्वन दइ आक्सीजन
करै जीवनक संरक्षण।
समतुल पर्यावरण करै छै जीव बचाबैले
परदुषण...।

दबाइ बनि कऽ गाछ जिआबै
मिठगर-मिठगर फल खिआबै।
जरना संग फर्निचर दइ छै
घर सजाबैले
परदुषण...।

करू दुनियाँपर रहम
रोपू पाँच गाछ कम-सँ-कम।
फेरसँ हरितक्रांति
धरतीपर बसाबै ले।
परदुषण...।

जंगल कटि-कटि भऽ गेल कम
तँए तँ जीव भरै छै दम।
गाछ आब नै काटू
पर्यावरण वचाबैले।
परदुषण...।

झारू-

राष्ट्र हितमे सभ किछु तियागू, धन-जीवन आ ऐशो-आराम।
संकटमे कहीं देश फँसेबै, जीवन होएत दुबर हराम।।

गीत-

हमर बिहार और हम बिहारी
भरि दुनियाँमे शोर छै।
धन-धन बिहार आ धन-धन बिहारी
पटना पगध बेजोर छै।

ई भूमि छै हिर-वीरक
सागरसँ गहींर धीरक।
हक कुमर सिंह प्रभा देवी
तइमे तँ मसहूर छै।
धन-धन...।

नालंदा-रोहताह-भोजपुर
बाँका-सिवान-सारन-भागलपुर।
दरभंगा-सुपौल-सहरसा
जनकपुर जगमे बेजोर छै।
धन-धन...।

अगम कुंआ-तारामण्डल गोल घर
सुन्दर छै बड़ पुल राजिन्दर।
निरमली महासेतु लऽ कऽ

दुनियाँमे मजहिर छै।
धन-धन... ।

झारू-
ज्ञानी खोजै अपन गलती, दुजेमे खोजै अज्ञान।
बैसल अज्ञानी खजूरक निच्चाँ, ज्ञानी मारि गेलाह मैदान।।

गीत-
पढ़ि कऽ देखियौ एकबेर गीता
ऐमे आत्मिक ज्ञान छै।
मानवताक रीढ़ ई पोथी
खुदमे देखाबै भगवान छै।

भीतरक सद्‌गुण देखबै छै
की छै जे अवगणु बतबै छै।
कसतुरी नाभी लखबै छै।
तँए ई जगमे महान छै।
मानवताकेँ...।

साफ करू तन-मन और वाणी
तियाग कररू दोसर के हानि।
और कहै छै सेवा धरू
सभसँ जे आसान छै।
मानवताकेँ...।

जेअपनेलकै ऐ धरतीपर
ओकरे मिललै अमत्वक जड़ि
ई शात्र प्रतिभा देवी
सभ पुस्तक केर शान छै।
मानवता...।

झारू-
काम-क्रोध मद लोभ मोह सन, सभ खेतमे दुक्खक बीज।
जँ पनपल ई मौका पा कऽ सुख केर भऽ गेल पावर सीज।।

गीत-
देखियो सभ बाबू-भैया
ई सभ की करै छै
सुख ले एलै बोड़ा लऽ कऽ
दुख किअए भरै छै

लोभ-मोहमे सभ अन्हरेलै
पढ़लो-लिखलो लोक बनरेलै
दुनियाँ-दारी के बताबए
भाइयोसँ लड़ै छै
सुख...।

करोध-कठोरता सभ छै धेने
अहंकार छै बेबस केने
दोर केर सुख-शांति देखि
किअए ई जरै छै
सुख...।

बहुत कम छै एहेन कलामी
जे नै करै छै कामक गुलामी
जेकरा चढ़लै ई गिरगिटिया
नरकमे सड़ै छै
सुख...।

झारू-
किछु ने देतै मंदिर-मस्जिद, देतै ने किछु गिरिजाघर।
मनक सपना पूरा हेतै, जीव-जगत केर सेवा करतै।।

गीत-
धरम करैत जे हुअए हानि
तैयो ने छोड़ि धरमक बानि
हमर माए ई सिखबैत रहए
साँझ-भोर-दुपहर दिन रानि।

जानि बूझि ने केकरो सतैहनि
हरिदम सत्तक रोटी खैहिहेँ
भऽ सकौ किछु सेवा करिहेँ
दिन-दुखी दुख अपन जानि
धरम...।

दया प्रेमक रखिहेँ आगाँ
टुटौ ने मानवता धागा
भुखलकेँ तूँ अन्न खियैहेँ
पियासलकेँ पियबिहेँ पानि
धरम...।

सत् डगर कखनो नै छुटौ
असत् अन्हार लोभ नै लुटौ
नैतिकता निष्ठा मर्यादा
धरम इमान कऽ जीबिहेँ मानि
धरम...।

झारू-
बँचल जीवन छै घोर अन्धेरा, जराउ प्यारसँ ज्ञानक दीप।
वर्णा देखेतै एतए नै किछो, मोती भरल सागरमे शीप।।

गीत-
कर भला तब हो भला
कर भला तब हो भला।
हम नै कहै छी ज्ञानी गुणी
सबहक नीक लेल कहि गेलाह।

दोसर सता कऽ दुख नै किनू
सुख-शांति ले सेवा बुनू।
जानै नै जे परक पीड़ा
जगमे अन्धा रहि गेला।
कर भला...।

जे जानलकै परक पीड़ा
तकरा मिललै सच्चा हीरा।
नाम अमर छै धरा धाममे
गैर खड़ा छै धरम किला।
कर भला...।

हिंसा छोड़ि सेवाकेँ पकड़ू
डोरी प्रेममे सभकेँ जकड़ू।
नै केकरोसँ शिकबा-सिकाइत
केकरासँ ने कोनो गिला।
कर भला...।

स्वागत गीत

हम नै छी अहाँ योग यौ पाहुन
अहाँ छी बड़ महान
स्वागत स्वीकारू श्रीमान्।

अहाँ छी गंगा अहाँ छी यमुना
पग धूलसँ पावन भेल अंगना।
अहाँक सेवाक ज्ञान नै हमरा
हम बालक अज्ञान
स्वागत...।

अहाँ छी अल्ला अहाँ छी शंकर
अहाँ छी हीरा हम छी कंकर
चरण धूल हम माथ लगा कऽ
कल जोड़ि करै छी परनाम
स्वागत...।

हमरा नै सोना सिंघासन
मन दै छी हम आसन
बैस बिराजू देव अतिथि
हम छी गरीब महान
स्वागत...।

झारू-
चलए समैसँ सूरज-चंदा, समैसँ होइ छै सुबहो-शाम।
समैसँ बान्हल सौंसे दुनियाँ, अहूँ करू सभ समैसँ काम।।

गीत-
बाबू समए कम छै काम छै बेसी डटू ना
आब तँ पाछाँ हट्ठू नै यौ।

भुदानी सभ छै अमीरकेँ पास
ऐमे गरीबकेँ नै छै आश।
फेरसँ भूमि भुदानी पुर्नविचारसँ विचारू ना
आब तँ...।

चलता-फिरता बनबू न्यायालय
गाम होइ जकर कार्यालय।
गौआँ-अफसर मिल कऽ
केस फाइलकेँ छाँटू ना।
आब तँ...।

विकास पहाड़ पड़ल छै आगू
आबो युवा वर्ग सभ जागू।
एकताक डोर पकड़ि कऽ
भेद-विष्मता काटू ना।
आब तँ...।

जब पौरुषे धीरज खोतै
ऐठाम केना कऽ जनता जितै।
निष्ठावानक बेटा
सुख जन-जनमे बॉटू ना।
आब तँ...।

झारू-

शासक होइ जन-जनमे स्नेही, हर जनपर होइ हुनकर प्यार।
होइत साकार शब्द प्रजा-वत्सल, होएत देश खिल कऽ गुलजार।।

गीत-

बहिना आब नै रहतै पाछाँ अपन बिहार गै
एलैए नीतीश कुमार गै ना।

सभटा सड़क ढलेतै पक्का
आब नै धँसतै गाड़ी चक्का
बहिना विकासमे बनतै
नव-नव मिनार गै।
एलैए...।

न्यायमे लगतै लबका दाउ
मिटतै सबहक पुरना घाउ
आब नै रहतै कोर्टमे
केस फाइलक पहाड़ गै
एलैए...।

खेत हेतै चकबन्दी सिंचित
रहतै कतौ नै बिलजी वंचित।
बहिना खेतमे हेतै
लबका हरा-बहार गै।
एलैए...।

एतै मेल एकतामे जोड़
हेतै सुख-शांति केर भोर।
सभ मिलि धकेलि गिरेबै
जाति-धर्मक देबाल गे।
एलैए...।

झारू-
दीप जराबू प्रेमक बाती, भरि कऽ तइमे सिनेहक तेल।
फुटै आभा सुख-शांतिक, जन-जनमे होइ सम्मत मेल।।

गीत-
बनि जीबै हम सभ भैयारी हम बाके बिहारी।

जाति-धरमकेँ करबै पाछाँ
तब ने राज कहेतै अच्छा
हिन्दु-मुस्लिम सिख-इसाई
सभ छिऐ पहिले बिहारी यौ
हम बाके...।

एकताक प्रमाण चढेबै
अपना बिहारकेँ आगाँ बढेबै
हर हाथमे रोजी दिएबै
मूलसँ मेटेबै वेरोजगारी यौ
हम बाके...।

अन्धविश्वासक राज हटेबै
कुरीतिकेँ धूल चटेबै
भूख-गरीबी रोग अशिक्षा
और भगेबै भ्रष्टाचारी यौ
हम बाके...।

झारू-
राज हुनकेसँ चलि सकै छै, जिनका रगमे दानी खून।
स्वामी भाव अंग-अंगमे भरल होइ, और भरल होइ सेवा गुण।।

गीत-
केकरोसँ नै रहबै पाछाँ
सभसँ जेबै अगारी यौ
सिर उठा गौरवसँ कहबै
हम छी बाबू बिहारी यौ

मेल एकताक फूल खिलेबै
घर-घर शांति दीप जरेबै
जग अमन केर झोरा लऽ कऽ
घर-घर बनबै भिखाड़ी यौ
सिर उठा...।

हक हमर जे आब कियो छिनतै
अपना ले दुख अपने छिनतै
आब ने केकरो मारल जेतै
दसो नहक देहारी यौ
सिर उठा...।

न्याय विकास प्रमाण चढेबै
राजक नाम दुनियाँमे बढ़ेबै
अन्धविश्वास अज्ञान-कुरीति
सभकेँ करबै पछाड़ी यौ
सिर उठा...।

झारू-
चलि गेला सभ कहैबला, जग अमन केर रोपू जड़ि।
के पढ़तै आब फेर ई फकरा, चिन्तित छै सभ पेट पोखरि।।

गीत-
यार दिलदार यार, की रौ भजार यार
तूँ बिहारमे जा कऽ की देखलैँ।

राजकर्मीकैँ सुतैत देखलौं
फुहरीकैँ घूमि-घूमि मुतैत देखलौं।
न्याय केर नामपर लुटैत देखलौं
जनताकैँ राजा कुटैत देखलौं।
न्याय मरै छल घूस अभावे
राज धृष्टराष्टक चलैत देखलौ।

यार दिलदार यार, की रौ भजार यार
तूँ पटनामे जा कऽ की देखलैँ।

राजभवनमे गदहा चलैत देखलौं
पदगौरवमे राजा मरैत देखलौं।
सभ गाड़ीमे पुलीश उड़ैत देखलौं
मंदिरमे महिला मुड़ैत देखलौं।
लुच्चा-लंपट कुरसी धऽ धऽ
मांसु मदिरापर पलैत देखलौं।

यार दिलदार यार, की रौ भजार यार
रेलगाड़ीमे चढ़ि कऽ की देखलैँ।

सही टिकटपर फाइन लगैत देखलौं
यात्रीकैँ नरक भोगैत देखलौं।
पुलीसक वर्दीमे डकैत देखलौं
टीटीकैँ पैसा ठकैत देखलौं।
पुलीश टीटी सभ दल बना कऽ
मुँह दुबराकैँ लुटाइत देखलौं।
यार...।

झारू-
जनता बनू अयोध्यावासी, गुणि कऽ मानवताक मंत्र।
तन धुअल संतोष जलसँ, गला बान्हल होइ मर्याया यंत्र।।

गीत-
छूक-छूक-छूक-छूक रेल विकासी
आब चलेबै पटरीसँ।
आब सभ कुछ बिजलीसँ हेतै
चलतै नै किछो बैटरीसँ।

राजकर्मी बनतै मधुमेबा
जमि कऽ करतै जनता सेवा।
अमन चैनक फल खियेतै
खोलि-खोलि विद्या मोटरीसँ।
आब सभ कुछ...।

गामे-गामे एकता बनेबै
अपन काज अपनेसँ करेबै।
आब नै केकरो घूसमे जेतै
बान्हल पैसा गठरीसँ।
आब सभ कुछ...।

शिक्षा केर आब लगतै झड़ी
घर-घर बनतै ज्ञानक बरी।
सभसँ कम जे पढ़ल रहतै
कम नै रहतै मेट्रिकसँ।

आब सभ कुछ...।

झारू-
चाहे ओला पुस गिराबै, टपकि रहल होइ जेठक घाम।
लिखलक किष्मत कहाँ विधाता, बैस घरमे करी आराम।।

गीत-
कतेक कहब हे बाबा वनजरैया
अपना मनक मुराद हे।
कहिया देखतै गरीब आजादी
केना कऽ हेतै आजाद हे।

आबो दलाली जीविते रहतै
अनबूझकेँ खून पिबतै रहतै।
साफ हेतै ई कचरा केना
देश हेतै केना आवाद हे।
कहिया...।

के लेतै ऐ गरीबक जिम्मा
एकरा हक ले सोच धिम्मा।
ऐ गरीबक दुख हरै कऽ
के देतै बुनियाद हे।
कहिया...।

सभ गरीब मजदूर मेहनतकस
बनि जीबै छै देशमे बेबस।
आजादी घर-घर पहुँचेतै
पैदा करह औलाद हे।

कहिया... ।

झारू-
हे भूमिक भाग्य विधाता, जगक अन्नदाता भगवान।
कहाँ पता तोरा शिबा छै केकरो, छूपल कतए छै खेतमे धान।।

गीत-
सुनह हौ बाबू सुनह हौ भैया
केना होइ छै ई टोना हौ।
माटिमे जौं गोबर मिलै छै
तब बनै छै सोना हौ।

जे मिलबै छै खेतमे गोबर
तकरा घरमे अन्न छै दोबर।
ई जेकरा महकै छै बाबू
दुखमे करै छै घौना हौ।
माटिमे...।

जे कोइ चुल्हीमे जरबै छै
समझू सोनाकेँ हरबै छै।
जे फेकै छै एने-ओने
तेकर विकास छै बौना हौ।
माटिमे...।

जे नै करै गोबरक आदर
फटले रहतै तेकर चादर।
आदर नमन जे एकरा करै छै

हरिदम रहै दिवाना हौ।
माटिमे...।

झारू-
पैसासँ सभ इज्जतबला, काज करै चाहै सैतान।
तैयो पुजै ओकरे दुनियाँ, किएक तँ ओ छै पैसामान।

गीत-
आँगनबाड़ी खेत खेसारी
बनि उजडै छै भाय हो।
सभटा खाइ छै भैंस अनेरबा
कोइ रोमए नै जाइ हौ।

रोमैले जेकरा भेजै गिरहतबा
दइ छै आजादी खाउ भरिपेटबा।
हमर भाग हमरा ले छोड़ू
जे छै हरा केलाइ हौ।
सभटा...।

के करतै एकर निगरानी
गिरल छै सबहक आँखिक पानी।
नीति-धरम निष्ठा-मर्यादा
सभटा गेलै बिलाए हौ।
सभटा...।

कर्मी संग रजो छै अन्धा
तँए छै चौपट्ट विकासी धंधा
निहित हएत राजकोषक पैसा
सभटा गेलै समाए हौ।
सभटा...।

झारू-
जगि कऽ रहब बाबू-भैया, और रहब चौकस हथियार।
फेर नै पाबए राजक कुरसी, लुच्चा-लंपट चोर-चुहार।।

गीत-
सुनह हौ बाबू सुनह हौ भैया
बाके बिहारी बन्धु मन मित।
ई एलेक्शन एहेन बुझाइ छै
असत्यक ऊपर सत्यक जीत।

सभ कोइ कहियौ हम नीतीश छी
सोलह नै सभ कोइ बत्तीस छी।
भूख गरीबी रोग अशिक्षा
सभ मिलि कऽ करबै विस्मित।
ई...।

गामे-गामे एकटा बनेबै
घर-घर शान्ति दीप जरेबै।
जाति-धरमसँ मनसँ भगा कऽ
गाबबै सभ मानवताक गीत।
ई...।

स्वाभिमानकँ सभ कोइ जगेबै
लोभ-लालचकँ मनसँ भगेबै।
सभ मिल ऊजरल घर सजेबै
सभ कोइ जपबै जय-जनहीत।
ई...।

झारू-

तरे स्वर्ग पण्डित पूजासँ, जे देखलक नै आइ तक कोइ।
जौं सच्चा ई जानैत मानव, पण्डितसँ नै पुजाबैत कोइ।।

गीत-

अन्धविश्वास अज्ञान कुरीति
भूख गरीबी भ्रष्टाचार।
ई अंग्रेज केना कऽ भगतै
बाबू-भैया करू विचार।

हरिदम घुमै चन्दा केर चक्कर
धरम करैत लोक भेलै फक्कर।
छप्पन करोड़कँ पुजैत-पुजैत
उजरल जाइ छै घर-दुआर।
ई...।

मुर्ख पढ़लमे की छै अन्तर
सभ पढ़ै छै एक्के मंतर।
बेचि धरम-निष्ठा मर्यादा
लगबै छै पैसाक जोगार।
ई...।

देखियौ ई अज्ञानक धंधा
गाड़ने छै कुरीतक झंडा।
भूख गरीबी बढ़बै खातिर
कऽ रहलै घर-घर परचार।

ई... ।

झारू-

छोड़ि सत्य इमान-धरमकँ, ताकै अज्ञानसँ तनक सुख।
मिट सकै छै भूख तात्कालिक, मेटाइ नै ऐसँ केकरो दुख।।

गीत-

एबरी हमरा जीताबह हौ बाबू
विकासक करबह काम हौ।
आब केकरो सतेबह हौ बाबा
आब पकड़ै छी कान हौ।

गली-कुच्चीमे सड़क दौगैबह
घर-घरे हम कल गड़ेबह।
ई सभटा कागजेपर हेतह
अपन भरबै मकान हौ।
आब नै...।

सौर ऊर्जाले फरम भरेबह
अपना चुल्हा लग तकरा गड़ेबह।
जौं कुच्छो कोइ बजबह बाबू
तेकर धरब हम कान हौ।
आब नै...।

फन्ड विकासी घर ढुकेबह
सभ जनताकँ घून पिसेबह।
केकरो शिकाइत तँ कोइ ने सुनै छै
विधि छै देशक बाम हौ।

आब नै... ।

झारू-
पैसा होइ छै शशिसँ शीतल, जौं पाबै ज्ञानी-होशियार।
करि कऽ सेवा दीन-दुखीकेँ, कऽ लेलक अप्पन बेड़ा पार।।

गीत-
झुमका देबौ बाली देबौ
गै बेटी तूँ पढ़ गै।
धरापर लटकल ज्ञानक डोरी
पकड़ि कऽ ऊपर चढ़ गै।

श्रद्धा रखिहेँ गुरु-गोसाँइ
गुरुचरण गहि धड़ गै।
जौं पढ़ैमे मन नै लगतौ
जोतमेँ केना घर गै।
धरापर...।

पढ़ विज्ञान तूँ गढ़ि-गढ़ि कऽ
जगसँ मेटा कहर गै।
लोक खड़ा अज्ञान आगिमे
पी-पी बिख जहर गै।
धरापर...।

जनहित केर तूँ पोथी पढ़ि कऽ
नेता बन तूँ बड़ गै।
गला लगा मानवता माला
गिरलकेँ कर ऊपर गै।

धरापर... ।

झारू-
सादी रीति सभ धर्ममे, छोट नै छै अति छोट छै।
फँसि कऽ ई अज्ञान-अंधेरा, घर उजाड़ि कऽ जरबै नोट।।

गीत-
कनी देखही गै दाइ कनी सुनही रौ भाय
कनी मानही गै माइ सासु अज्ञानवश बनलै कसाइ।

नोट गीन-गीन कऽ नोट गनै छै
अपने फाँसी आप बनबै छै।
ई अज्ञानक देन कुरीति
कऽ रहल दहेज छै सबहक धुलाइ।
कनी...।

लोभक कारण लोभी बनै छै
बँचतै नै किछो सेहो जनै छै।
तब नै किअए आदर्श देखा कऽ
मस्जिद-मन्दिरमे करै सगाइ।
कनी...।

सासु-पुतोहुकेँ रोज कनबै छै
कम-जहेजक रोब जमबै छै।
सदी एक्केसम चलै छै बेटी
सासुकेँ दही किछु सबक सिखाइ।
कनी...।

झारू-
हम और हमरा केर जालमे, फँसल एतए छै सभटा बन्दा।
अही मोहकेँ कारण मानब, कर्म करै छै बनि कऽ अन्धा।।

गीत-
पढ़ै छेलिऐ लिखै छेलिऐ सिखै छेलिऐ ज्ञान
केना देशक हाल सुधरतै
दुखक हेतै केना निदान।
बाजू भैया रामे-राम
रामे-राम हौ भाय
सभ अन्हरेलै अज्ञानक अन्हारमे।

सबहक मनमे लोभ जकरलक
सुझै नै नीति विधान।
गला दाबि कऽ दहेज गिनाबै
रिस्ता भेल बदनाम।
बाजू...।
सभ उजरलै दहेजक लहरिमे।

अन्धविश्वासक डंका पीट-पीट
नोटक बान्है बोझ।
कुरीतिक जाल फैला कऽ
सभकेँ केने छै सोझ।
बाजू...।
बिहार फँसल छै कुरीतिक जालमे।

जनसेवाक पाठ बिसरि कऽ

सेबैए मूर्ति-भगवान।
छोड़ि अपना कर्त्तव्य-कर्मकँ
देवीपर देने छै धियान।
बाजू...।
लोक ओझरेलै अन्धविश्वासक जालमे।

झारू- मानवता

१
ताज मिलै सम्पूर्ण जगतकेँ, आ बनि जीबए झारूदार।
मानवमे मानवता होइ तँ, बदलै नै ओकर अवतार।।

२
रंगू नै जीवन जाइत धरमसँ, सभकेँ मानू अप्पन मीत।।
नीच ऊँचक भेद भुलि कऽ, गबैत रहु मानवता गीत।।

३
सत्ता हमर सारे जगतपर, मानवता हमर मेघा विधान।।
पालनमे जे करए ढिठाइ, स्वीकारए ओ नरकक खान।।

४
जन-जनपर हम्मर शासन छै, हर चिजपर हम्मर अधिकार।।
कोनो प्रप्त अप्राप्त कहाँ छै, तर्क लगा करू स्वीकार।।

५
हर ओ मानव हमर सिपाही, जिनका छन्हि मानवता ज्ञान।।
मारू कुचलि दियौ बेमानवता, बढ़ाउ जगमे अपन नाम।।

६
हमरासँ पहिले कोनो नै शासन, नै छै कोनो धर्मक विधान।।
हमरा बिनु जगत सुन्ना छै, हतैबला छै पशु समान।।

७
हमरा लेल छै कियो नै ऊँचा, नहि कियो नीच नादान।।

जे बरतलक ऐ धर्मकेँ, अटल जगतमे हुनकर नाम।।

८
हम मानवक मूलाधार छी, सभ धरमक पिता समान।।
पाप पुण्यसँ अति परे छी, देवतो छी हम्मर संतान।।

९
मानव वास्ते सीमा सरहद, मानवताकेँ सक्कर खेद।।
जाति धरम सरहदसँ अलग छै, मानवतामे कोनो नै भेद।।

१०
जब धरै मानवता मानव, रहै नै भीतर जाइत धरम।।
निष्ठा इमान कऽ करए आदर, और पुजै नित्य सत् कर्म।।

११
जब मानव धरै मानवता, तब बढ़ै जन-जनसँ मेल।।
दूर रहै घरसँ सभ टेन्शन, ब्यापै नै कोनो झगड़ा झेल।।

१२
जब धरै मानवता मानव, पक्का होइ ओकर इमान।।
डर लगै छै असत् कर्मसँ, किन्नौं नै बदलै ओकर जुवान।।

१३
जब मानवता धरै मानव, तब उपजै मन लाज लेहाज।।
आदर दीली बड़ा पाबै छै, रहै नै छोट प्यारसँ बाज।।

१४

मानव जब धरै मानवता, ओकरासँ कोइ दुखै नै जीव।
और नै दुनियाँ ओकरा सताबै, जीवमे देखै अल्ला शिव।।

१५
मानव जब मानवता धरै, तन पहिर नैतिक परिधान।।
धरम इमानक रक्षा खातिर, करै न्यौछावर धन आ जान।।

१६
मानवता जब धरै मानव, मिट जाए निच ऊँचक शान।।
दुनियाँ देखाबै सम बरबरि, देखै ने कियो अप्पन आन।।

१७
धरै जब मानवता मानव, ब्यापै नै ओकरा त्रिविध ताप।।
काम क्रोध ने लोभ सताबै, अन्धविश्वासमे करै नै जाप।।

१८
मानवता जब शासक धरै, सुख सम्पन्न होइ जनता तमाम।।
मिटै मूलसँ भूख गरीबी, रहै नै पाछाँ विकाशी काम।।

१९
मानवता जौं न्याय कर्मी धरै, कम हेतै केश फाइलक थान।।
कहल मुक्त भऽ साड़ी जनता, देखतै फेरसँ नया बिहान।।

२०
जौं मानवता धरै सिपाही, शुद्ध शासन कऽ रचै विधान।।
झगड़ै नै जन-जनसँ कियो, शान्ति होएत सबहक परिधान।।

२१

मानव जब मानवता धरै, प्रगट होइ भीतर नीत इमान।।
निष्ठा मर्यादा नैतिकता, दया धरम सतकरम विधान।।

२२
जब त्यागै मानवता मानव, भऽ गेल ओकर शान्ति भंग।।
जेकरा अखनि तक कहै छल अप्पन, ओकरेसँ भऽ गेल भारी जंग।।

२३
मानवता जब छोरै मानव, भऽ गेल ओकर बेड़ा गर्क।।
चिक्कारे जगवासी ओकरा, जीबै जीवन बना कऽ नर्क।।

२४
अमूल रत्न मानवता मानू, जे पॉलक ई जनहित भाव।।
दुख तँ हुनका रहिते नै छन्हि, रहै नै कोनो सुक्खक अभाव।।

झारू- ज्ञान

१

कऽ रहलौं वन्दना सभकें, हम अज्ञानी नीच नादान।
करि कऽ क्षमा सभ भूल-चूककें, सभ मिलि देबै अभयकें दान।

२

जीवन-मरण पालन केर रचना, प्रकृति केर गजब विधान।
ऐ रचनाकें भेदि-भेदि कऽ, जानि गेल अछि ई विज्ञान।।

३

सूर्या ताप जलवायुक संग, धरती और गगणक तीर।
सूत्रवत् सयोग करै छै, जइसँ जनम-मरण जंजीर।।

४

अही पंचशक्ति केर ज्ञानी, नाम देलनि अल्ला-भगवान।
कियो कहै छथि राम प्यारसँ, ईसा-मूसा सुक्खक धाम।।

५

एकर प्रमान स्कूली पुस्तक, किछु बिसवास करू श्रीमान्।
पढ़ि कऽ जेकरा आइ जगत भरि, कऽ रहल लोक गजब केर काम।।

६

आबू जानू वायुमण्डल, नाइट्रो अठहत्तर प्रसेंट।
ओ एक्कैस अन एक प्रतिशत, रहए घेरने हरिदम प्रजेन्ट।।

७

आर्गोन कार्वण हिलियम हाइड्रो, ओजोन नियोनमे एक प्रसेन्ट।

कोहरा आंधी-बर्खा बादल, संग तुफान बिजली करेन्ट।।

८
एकर ऊँचाइ अठारह किमी, मानू एकरा प्रकृति गर्भ।
प्रलय-प्रभव अहीसँ संभव, अहीसँ चलित जीवन सर्ग।।

९
तपि कऽ भीज कऽ सूखि कऽ जमि कऽ, करै छै नाइट्रो जग निरमान।
जग रचियता तत्व बेरानबे, सबहक लेल छै ई वरदान।।

१०
नाइट्रोजनमय सौंसे जगत छै, अधिक छै सभमे एकरे अंश।
होइ चाहे सौंसे जीव-जगत केर, खाहे ओकर सारा वंश।।

११
जहिना अक्षर ग्रन्थ रचै छै, तहिना तत्व रचै छै जीव।
रचना एकर ईसा-मूसा, हजरत तुलसी राम और शिव।।

१२
पृथ्वीक गुरूत्वाकर्षणसँ, सटल वायु धरतीपर।
छी प्रभावित अहीसँ हम सभ, धरती केर सभ चेतन-जड़ि।।

१३
गोल-गोल छै अनु-प्रमाणु, रचल छै जइसँ ई जग काण्ड।
सुरूज चंदा तारा गोल छै, गोल बनल छै ई ब्रह्माण्ड।।

१४
कऽ रहलै प्रकृति नियंत्रण, सभकेँ कहाँ छै एकर ज्ञान।
ओ भेद एकर की जनतै, जे नै पढ़लक भूगोल-विज्ञान।

१५
तन अहाँ केर क्षेत्र मात्र छी, ज्ञाता मात्र प्रकृति जानू।
जे दुनूक भेद जानलक, गीता कहै छै ज्ञानी मानू।।

१६
गूथल छी हमसब प्रकृतिमे, जहिना धागामे मोती।
अभिन्न छी हम सभ एक-दोसरसँ, जहिना बातीसँ ज्योति।।

१७
प्रकृति एक तरू लता छी, फल-फूल छी जीव तमाम।
कहाँ कल्पना हमर ऐ बिनु, हिनका नै छै हमर काम।।

१८
प्रकृति छी गाए दुधारू, जइ खिबै जग सिनेहक गाछ।
तकरा भेटै छै दूध दया केर, दुख नै रहै छै तकरा पास।।

१९
प्रकृति छै धागा जइसन, जीव गूथल माला मोती।
सभ रहि जाइ छै मैला पत्थल, किछुमे जरि जाइ छै ज्योति।।

२०
की इच्छा अपनेकेँ नै छै, हमहूँ चमकी बनि स्टार।।
निश्चित पूड़त अहुँक आसा, छोड़ि असत् करू सत्य स्वीकार।।

२१
आबू जानू संख्या रेखा, मानू एकरा जीवन आधार।
एकरा विचारि कऽ बाबू-भैया, देखि सकै छी स्वर्गक द्वार।।

२२
सुन्यकँ मानू संत बरबरि, दाया पलस केर सुख आधार।
वाया माइनस असत् बरबरि, एनए ठाढ़ छै दुखक पहाड़।।

२३
सम रहनाइये काफी मानू, भवसारग केर नौका बीच।
धियान हमेशा एते राखू, असत् ने लिअए काँटा खिंच।।

२४
सेवाक बटिखारा चढ़ाबू, काँटा झूकतै पलस केर ओर।
सुख-शांति जश कृत्ति लऽ कऽ, सभ दिन एतै लबका भोर।।

२५
ज्ञान दबाबै पलसमे काँटा, माइनसमे दबबै अज्ञान।
सम-बराबरि रहनाइ काफी, सममे सदा अटल भगवान।।

२६
ज्ञान बरबरि ऐ दुनियाँमे, छै नै कियो नाशी-पाप।
करू साफ बस तन-मन अपन, बैसतै आबि कऽ अपने आप।।

२७
विष-अमृत सारे जगत भरल छै, लिअए ज्ञानसँ अमृत चूनि।
अज्ञानक कुचक्रमे पड़ि कऽ, किअए मरै छी माथा धूनि।।

२८

मुश्कील बहुत छै ऐ धरतीपर, मिलए कतौसँ सत्यक ज्ञान।
जीवन जौं पावन करनाइ अछि, छोड़ि सतेनाइ सेवा ठान।।

झारू- कर्म

१

बहुत कोइ देलकै ऐ दुनियाँकेँ, बाबा बनि-बनि कऽ उपदेश।
दऽ की सकै छी हम झारूदार, सूनि लिअ कर्मक सन्देश।।

२

मानव धारए धनुष धर्मक, नीत इमानक चढ़ा कऽ तीर।
खिंचै प्रत्यन्चा ज्ञानक गुस्सा, लक्ष्य करि कऽ असत् लकीर।।

३

कर्म करब अज्ञानक दमपर, हरिदम जइमे दुखक आस।
सुख भेटै छै ओइ वन्दाकेँ, जेकरा भीतर ज्ञानक बास।।

४

दुनियाँ भरिक सुख होइ हमरा, चाहि रहल अछि सारे लोक।
लेकिन संभव कहाँ छै केकरो, मात्र भेटै सुखक संयोग।।

५

सुख-दुख पड़ल छै गोद प्रकृति, भेटतै केना जानू तंत्र।
निश्चित सुक्खक ओ छै भागी, जे जानलनि सत्कर्मक मंत्र।।

६

सुख भेटत अछि केकरा चाहने, चाहि कऽ दुख भेल केकर दूर।
ई अज्ञान छी बाबू-भैया, ई नै प्रकृतिक दसतूर।।

७

धियान धरू रेडियो धर्मिता, केना चलाबै छै बेतार।

तन-तरंगसँ फलक निर्णए, करए प्रकृति सेचि-विचारि।।

८
एकरे मानू नभ-मण्डलमे, जीव जगत केर फल खतिआन।
कर्म-फलक सबहक लेखा, सत् अटल प्रकृति विधान।।

९
हवा जल आ सूर्या तापसँ, बनल छै सारे देह स्थूल।
सत् कर्ममे एकरा जोरू, जोड़ि असत् मे करू नै भूल।।

१०
सत् कर्मसँ ऐ दुनियाँमे, शांतिक संग छै सुख छै कुल।
असत् संग संगति करब तँ, जीवन गुजरत बनि कऽ शूल।।

११
कर्म मात्र दुइये दुनियाँमे, एक सच्चा दूजा छी भूल।
सत् असत् केर ऐ चक्करमे, फँसल छै ऐठाम मानव कुल।।

12
जीव दुखाइ नै जानि-बूझि कऽ, भऽ सकए जेते बाँटू प्यार।
शत्रू-मित्र ने बैरी कियो, यएह तँ छी सत् कर्म हमर यार।।

१३
सत् कर्मपर सेवा जानू, जइसँ होइ छै जग निर्माण।
सूजश मान प्रतिष्ठा धनसँ, भरल रहै घर-वार मकान।।

१४
असत् कर्मपर पीड़ा जानू, जीवन जइसँ होइ वदनाम।

अपजस और नरक केर भारी, जग द्रोही होइ सभटा काम।।

१५
बड़ा ने कियो जाति लऽ कऽ, नै बड़ा कियो धर्मसँ।
कियो बड़ा अछि ऐ धरतीपर, वस अपने सत् कर्मसँ।।

१६
जब-जब कर्मकेँ कर्मसँ जोड़ू, मन धरू सत् कर्मक धियान।
दुखै ने जगवासी कियो, यएह तँ छी सत् कर्मक ज्ञान।।
१७
काम सभ प्रकृति केर छी, अलग-अलग छै सबहक सूत्र।
अही सूत्रमे जोड़ि तनकेँ, पलि रहल सभ जीवक पुत्र।।

१८
काम सभ प्रकृति केर छी, जइ करै छी अहाँ-हम।
चाहै मेटाउ दुख जगतक, या बूनू दुनियाँमे गम।।

१९
असत् कर्मसँ नाता तोड़लक, जोड़ि लेलक सत् कर्मक डोरि।
देखू हुनका चलि पड़ल अछि, खूलल द्वार जन्नत केर ओर।।

२०
पुण्य मात्र छी परसुख देनाइ, पाप मात्र परदुक्खक दान।
आइक ने सदियोक बात छी, कहि गेला ज्ञानी विद्वान।।

२१
धन बल भेटल तँ की भेटल, जौं भेटैत किछु सेवा कर्म।

लऽ लिअ शिक्षा सत् गुरूसँ, फेरो जानबै एकर मर्म।।

२२
सेवा तँ भगवान मात्र छी, कर्मकेँ जौं मानबै पूजा।
अहीसँ सद्गतिकेँ भेटबै, राह नै छै कोनो दुजा।।

२३
काम-क्रोध मद लोभ मोहसँ, लगल सभ धर्मीमे जंग।
सभ धर्मक कहै छै पोथी, पकड़ू सभ सत् कर्मक संग।।

२४
कर्मक जे कियो देलनि सत्ता, मानलक एकरे अपन भगवान।
जगमे भेटलै ओकरे शांति, सुख सम्पन्न अछि ओ इन्सान।।

२५
कर्म करू सभ नित्य धर्मसँ, बनैत रहत अहाँक बात।
फलक इच्छा करू ने कखनो, ई तँ अछि प्रकृतिक हाथ।।

२६
शरीर अहाँक यंत्र मात्र छी, किछु कराउ एहेन काम।
धरतीपर जे अमर कराबए, ऊँचा करए जगमे नाम।।

२७
जिनाइ तँ ओकरे जिनाइ छी, जे जानलक ई गहरा राज।
धन जीवनक दाउ लगा कऽ, कऽ रहल जगसेवा कार्य।।

झारू- रामायण

१

पहिल वन्दना गुरु चरणमे, दुजे चरण शंकर भगवान।
दुनू चरण अहीं केर नीचाँ, स्वीकाररू सत् सत् प्रणाम।।

२

ओइ घरकेँ तँ अयोध्ये मानू, जइ घर करए रामायण बास।।
कर्म रँगल होइ रामायणसँ, दुख नै रहतै तेकरा पास।।

३

श्याम रँग हे राम गोसाँइ, जाति-मानवक चश्मा उतार।
कर्म-कथा बस देखए रमायण, पूजा-पाठक उतरए बोखार।।

४

कर्म-कथा छी राम-रामयण, सुख-शांतिक सत्यक प्रतीक।
अपनाकेँ ऐ सत्य कर्म कऽ, सभ पहुँचै सुखक नजदीक।।

५

जइसँ सुधरइ जग-भरि मानव, लिखलनि कथा मुनि वाल्मिक।
ओ की जानतै एकर भाषा, लगल जिनका अज्ञानक दीक।।

६

सभ पढ़ि सुनै छथि एकरा, पुजै छथि सभ आरती उतारि।
कर्म घारक मूल मंत्रपर, करै नै छथिन कियो विचारि।।

७

सभ पढ़ै-सुनै छथि एकरा, भरल अछि भीतर एकर कथा।

ज्ञान मात्रसँ किछु नै होइ छै, धरू भीतर किछु कर्म-बेथा।।

८
जूटल अछि मानव केर रिस्ता, धरती केर सभ जीवक संग।
एकरा निमाहू सत् कर्मसँ, रिस्तेदार कियो होइ ने तंग।।

९
दादा-पोता-बाप आ बेटा, सभ बनै छथि एक्के लोक।
करम-धरम छै सबहक अपन, मिलाउ रामायणसँ संयोग।।

१०
पिता बनू अहाँ राजा दशरथ, पुत्र बनू राम भगवान।
भाय भरत लक्ष्मण-शत्रुध्न, माता बनू कौशल्या समान।।

११
पिता बनू अहाँ राजा दशरथ, पुत्रमे देखू अपन प्राण।
पोसू एकरा सत्यक कमाइ, और दिलाबू सत्तकर्मक ज्ञान।।

१२
पिता बनू अहाँ राजा दशरथ, बच्चा भेजू नित्य स्कूल।
ज्ञान-विज्ञानक पढ़ा कऽ पोथी, सभमे खिलाबू ज्ञानक फूल।।

१३
भाय बनू अहाँ लक्ष्मण सन, छोड़ू ने भारी दुखमे संग।
अहूँ ओहीमे हाथ बटाबू, राज-काज जौं कऽ दिअए तंग।।

१४
भाइक खातिर सभ किछु तियागू, सुख-शांति और राजमहल।

निभा कऽ रिस्ता धरा धामक, जगमे करू मर्यादा अटल।।

१५

पुत्र बनू अहाँ रामचन्दजी, पिता वचन लऽ तियागलनि सुख।
नीति इमान मर्यादा खातिर, ईस नै केलनि बनबासक दुख।।

१६

बेटी बनू सिया सुकुमारि, टारू नै किन्नौं बड़क बात।
रहए प्रतिक्षा हुकुमक हरिदम, जेठ, पुस, सौनु आकि दिन-राति।

१७

कन्या बनू सिया सुकुमारि, ऊँच करू पिताक पाग।।
हुअए भूल ने कोनो एहेन, जइसँ लागए पागमे दाग।

१८

पुत्री बनू सिया सुकुमारि, बड़ा कऽ सदिकाल करू लिहाज।
करि कऽ सेवा जगवासीक, चढ़ा दियौ सिर पिताक ताज।।

१९

पत्नी बनू सिया सुकुमारि, पतिक खातिर तियागू सुख।
हुनके खुशीमे मात्र खुशी होइ, हुनके दुखसँ मात्र होइ दुख।।

२०

पत्नी बनू सिया सुकुमारि, अहूँ पतिकँ मानू राम।।
दियौ नै आदेशक मौका, समझि कऽ हुनकर मनक काम।।

२१
पत्नी बनू सतीअनुसुइया, जुबा ने उतरे पतिक नाम।
पर पुरुष सपनो नै देखल, पतिकेँ मानलनि चारू धाम।।

२२
पत्नी बनू मनदोदरी रानी, पतिकेँ दियौ सत् नीत सलाह।
दियौ ने गुस्सा केर मौका, करि कऽ कोनो नीच गुनाह।।

२३
पुतोहु बनू अहाँ सीता-रानी, सासु पाबए माता केर मान।
ससुर-भैसुर होइ पिता बराबरि, ननदि-दिअर भाए-बहिन समान।।

२४
पुतोहु बनू अहाँ रानी सीता, ससुक छीनू हाथक काम।
गोतनी जेठानी सगी बहिन सन, जेठ लगै भाय बड़ा समान।।

२५
शासक बनू अहाँ रमचन्द्रजी, जन-जनमे सुख भरू भरपुर।
होइ उत्थान दबल-कुचलकक, और होइ देशक गरीबी दूर।।

२६
पहिर कऽ माला मानवताक, देश विकासक लगा दियौ होड़।
अहाँ बनि जाउ चाँद गगनक, निहारए जनता बनि चकौर।।

२७
जनहितकेँ कोनो ठेँस ने पहुँचै, होइ एकताक नारा बुलन्द।
निष्ठा चढ़ि कऽ ऊँच शिखरपर, करए फूटक कारा बन्द।।

२८
जे जेतए करै छी जे किछु, देश सेवाक सभ छी काम।
रक्खू सुरक्षित अपन नीति, खाउ नै ओइमे अपन इमान।।

२९
जनता बनू अयोध्यावासी, शांति केर पकड़ू आधार।
दुखी ने होइ जन-जनसँ कियो, सभमे होइ सेवाक विचार।।

३०
जनता बनू अयोध्यावासी, हरिदम पाबू सत्यक साग।
नीति धरम इमान जलसँ, हरा-भरा होइ सबहक बाग।।

३१
जनता बनू अयोध्यावासी, भायचाराक पढ़ि कऽ पाठ।
गुनि कऽ प्रेम दयाक डोरी, बान्हु सभ मानव केर गाँठ।।

३२
सबहक सत्रु सबहक दुश्मन, काम-क्रोध-लोभ-अज्ञान।
लोभ छै तइमे सबहक नाशी, दया-धरम और नीति इमान।।

३३
की कऽ सकल चतुरेगी सेना, की केलनि जोग जप विज्ञान।
ध्वष्त भेल अयोध्या नगरी, जब धेलनि केकइ अज्ञान।।

३४
भेल अज्ञान वस रानी केकइ, की पुरा भेल उनकर आस।

जे प्यारा राजगद्दी पाबैत, भेज देलनि हुनका बनवास।।

३५
ई करामात अज्ञानक छी, उनटा दइ छथि जजबात।
उलटि गेल अज्ञानसँ सभटा, ऐ धरतीकेँ मानव जात।।

३६
पाइये टामे सभटा सुख छै, घेरि लेलक सभकेँ अज्ञान।
झोंकि देलनि सभ शक्ति ऐ लेल, गमा कऽ निष्ठा धरम-इमान।।

३७
काम-क्रोध मद लोभ मोह सन, सभ खेतमे दुखक बीज।
जौं पनपल ई मौका पाबि कऽ, सुख केर भऽ गेल पावर सीज।।

तियाग- महा झारू

१
जीवन कोन सर्वोत्तम होइ छै, बाबू सोचू करू विचार।
नाम अमर होइ धरा-धाममे, तियागक सभ पकरू आधार।।

२
कर्म बिना अहाँ जीअब केना, अही लेल कर्म-फलक तियाग।
सभ कर्म छै जगमे दोषी, जइसँ अपने पाबै छी साग।।

३
हरा रहत घर-द्वार अहाँकेँ, ऐमे फेंटू तियागक जल।
जौं अहाँ एहेन नै कऽ सकब, निश्चित दुखमय होएत कल।।

४
सत्य-अस्त छी मनक सृजन, मात्र छै करनाइ असत्यक तियाग।
असत्य छोड़ि की बचै छै, झटसँ कहू सत्यक बाग।।

५
एकरा बिनु अहाँ सपनाउ नै, हमर जन्म छी मानवक।
असत् पकड़ि कऽ एत्ते जानू, जनम बितैए दानवक।

६
असत् तियाग तँ मात्र तियाग छी, मनसँ तियागू ऐ इंसान।
असत् तियागि कऽ जे जिबै छै, रहै छै बनि कऽ ओ भगवान।।

७
जेतए अहाँक चुल्ही जरै छै, ओतए नै पहुँचैत असत्क दाना।
अहीसँ दुखक सृजन होइ छै, विष भरल छै ओहेन खाना।

८
मीठ होइ सत्यक सूखल रोटी, असत्यक मेवा करए तियाग।
ओइ घरमे सभ देव पुरुष छै, हरा रहए ओ हरिदम बाग।।

९
मन चाहै छै मनसँ केकरो, और करै मन केकरो तियाग।
इच्छा, द्वेष तँ नाम छिऐ एकर, ऐसँ कटै छै सुखक बाग।।

१०
सभसँ पहिले एकरे तियागू, खुशी नै ऐमे छै गम।
तियागि नै सकबै दोष एहेन तब, तब समझू अज्ञान छी हम।।

११
सुखक इच्छा सभकेँ सताबै, अही लेल चाहतक तियागू।
सुख शांतिक ई छी नाशी, सोबू नै बाबू आबो जागू।।

१२
दुखसँ द्वेष तँ सभकेँ होइ छै, एकरा चाहए तियागए सभ।
लोहाबला गेट लगाबू, की दुख घर नै एते तब।।

१३
सुख मिलल अछि केकरा चाहने, चाहि कऽ दुख भेल केकर दूर।
ई अज्ञान छी बाबू भैया, ई नै दुनियाँक दसतूर।।

१४

काम-क्रोध मद-लोभ मोहसँ, सभ करै छै असत्यक काम।
पहुँच सकल नै एकरा तियागने, कियो धरती सुखक धाम।।

पुलिस सूधारक महा झारू-

१
पुलिस शब्द स्पेनिश भाषा, भीतर एकरा छह उदेस।
अही लेल शासक अपनौलनि, ऐ धरतीक सभटा देश।।

२
पहिला अक्षर पी कऽ जानू, पीसँ बनै छै शब्द पोलाइट।
शिष्ट हुअए सभ हमर सिपाही, देशक शासन होएत हाइलाइट।।

३
अक्षर दोसर ओकँ जानू, ओसँ आएल शब्द ओब्जेक्ट।
मात्र उदेस होइ सुशासनकँ, और एकरे सभटा सब्जेक्ट।।

४
एल लाबलक लिगर एडवाजर, अर्थ कानूनी उपदेशक।
राजा-जनता बीचक डोरी, दुनूकँ तूँ प्रकाशक।।

५
इंटेलिजेन्सकँ आइ बजेलक, तूँ छह बेटा चतुर-चलाक।
देखा करिश्मा कोनो एहेन, राजा-प्रजा रहए अवाक।।

६
अक्षर सी चेकिंगकँ कहलक, नित इमानसँ कर परताल।
सेवा होइ बस न्याय केर खातिर, करए नै कहियो तूँ हरताल।।

७
ई बोलेलक इनरजेटिक, कर्मठ जानू एकर अर्थ।
शांति-संपन्न देश हो हमर, धरू सिपाही मन ई व्रत।।

८
जनता हितक रक्षा खातिर, बनल सिपाही असीम अधिकार।
बनि कठपुतली धनबलाक, हित-सँ-अहितमे बदलल विचार।।

९
लेतै के सामाजक जिम्मा, करतै सुरक्षा एकरा के।
जेकरा छै रक्षा केर जिम्मा, भक्षक बनि बैसल छै से।।

१०
नीक छल राज ऊ अंग्रेजी, कहि रहल अछि पुरनिया लोक।
शत्रु लगै मित्रसँ अच्छा, सोचू केहेन ई संयोग।।

११
चूप हो बेटा पुलीस अबै छै, निर्धनमे ई खौफ-निसान।
नागरि डोलबैत ओकरा आगू, जे देखाबए एकरा धनवान।।

१२
कुल-खनदान ने देखए राजा, शायद रजौ छै बकलेल।
जइ घर सभ दिन चोर जनमलै, पुलिस वर्दीकँ दइ छै धकेलि।।

१३
वर्दी पुलीसमे चोर घूसल छै, संगमे गामक दलाल छै।

तँए तँ सड़क बीच भोली जनता, भऽ रहल हलाल छै।।

१४

इनकलाब की अहीले एलै, पुलिस चोर संग जुट्टेले।
अनपढ़-बेचरा-गरीब जनताकेँ, उक्खरिमे दऽ कऽ कुटैले।